भारत की कला एवं संस्कृति
(Art and Culture of India)

☞ हम वास्तव में यह नहीं जानते कि **पूर्व पुरापाषाण युग (Lower Paleolithic)** के मनुष्यों ने क्या कभी कोई कला वस्तु बनाई थी। लेकिन हमें पता चलता है कि **उत्तर पुरापाषाण काल (Upper Paleolithic Time)** तक आते-आते मनुष्य के कलात्मक क्रिया-कलापों में भारी वृद्धि हो गई थी।

☞ भारत में शैल-चित्रों की सर्वप्रथम खोज 1867-68 ई. में पुराविद् आर्किबोल्ड कार्लाइल ने, स्पेन में हुई **लाल्तामीरा की खोज से भी 12 वर्ष पहले की** थी।

☞ **भीमबेटका** मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल के दक्षिण में 45 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जहां 10 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में लगभग 800 शैलाश्रय (शेल्टर) मौजूद हैं। इनमें से 500 शैलाश्रयों में चित्र पाए जाते हैं।

☞ **भीमबेटका की गुफाओं की खोज वर्ष 1957-58 में डॉ. वी.ए. वाकणकर द्वारा की गई थी।**

☞ उत्तर पुरापाषाण युग के चित्र **हरे** और **गहरी लाल रेखाओं** से बनाए गए हैं। इनमें से कुछ छड़ी जैसी पतली मानव आकृतियां हैं लेकिन अधिकांश चित्र बड़े-बड़े जानवरों, जैसे भैसों, हाथियों, बाघों, गैंडों और सुअरों के हैं, कुछ चित्र **धावन चित्र (Wash paintings)** हैं। लेकिन अधिकांश चित्र **ज्यामितीय आकृतियों** से भरे हैं।

☞ मध्यपाषाण युग के चित्रों की संख्या सबसे अधिक है। इस अवधि के दौरान विषयों की संख्या कई गुना बढ़ गई, मगर चित्रों का आकार छोटा हो गया। शिकार दृश्यों को प्रमुखता मिल गई।

☞ भीमबेटका के कलाकार अनेक रंगों का प्रयोग करते थे जिनमें काला, पीला, लाला, बैंगनी, भूरा, हरा और सफेद रंगों की विभिन्न रंगतें शामिल थीं। लेकिन सफेद और लाल उनके अधिक पसंदीदा रंग थे। रंग और रंजक द्रव्य विभिन्न चट्टानों तथा खनिजों को कूट-पीस कर तैयार किए जाते थे।

☞ सिंधु नदी की घाटी में कला का उद्‌भव **ईसा-पूर्व तीसरी सहस्राब्दी के उत्तरार्द्ध** में हुआ।

☞ सिंधु घाटी सभ्यता के दो प्रमुख स्थल हड़प्पा और मोहनजोदड़ो नामक दो नगर थे, जिनमें से हड़प्पा उत्तर में और मोहनजोदड़ो दक्षिण में सिंधु नदी के तट पर बसे हुए थे।

☞ हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो वर्तमान में पाकिस्तान में स्थित हैं। कुछ अन्य महत्वपूर्ण स्थलों से भी हमें कला-वस्तुओं के नमूने मिले हैं, जिनके नाम हैं- लोथल और धौलावीरा (गुजरात), राखीगढ़ी (हरियाणा), रोपड़ (पंजाब) तथा कालीबंगा (राजस्थान)

☞ हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में पाई गई पत्थर की मूर्तियां त्रि-आयामी वस्तुएं बनाने का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। पत्थर की मूर्तियां में दो पुरुष प्रतिमाएं बहुचर्चित हैं, जिनमें से एक पुरुष धड़ है, जो लाल चूना पत्थर का बना है और दूसरी दाढ़ी वाले पुरुष की आवक्ष मूर्ति है, जो सेलखड़ी की बनी है।

☞ पुरातत्वविदों को हजारों की संख्या में मुहरें (मुद्राएं) मिली हैं, जो आमतौर पर सेलखड़ी और कभी-कभी गोमेद, चकमक पत्थर, तांबा, कांस्य और मिट्टी से बनाई गई थीं। उन पर एक **सींग वाले सांड़, गैंडा, बाघ, हाथी, जंगली भैंसा, बकरा** आदि पशुओं की सुंदर आकृतियां बनी हुई थीं।

☞ हड़प्पा की मानक मुद्रा में **2-2 इंच** की वर्गाकार पट्टियां होती थीं, जो आमतौर पर सेलखड़ी से बनाई जाती थी। **प्रत्येक मुद्रा में एक चित्रात्मक लिपि खुदी होती थी, जो अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है।**

☞ **इस मुद्रा में एक मानव आकृति पालथी मारकर बैठी हुई दिखाई गई है। इस मानव आकृति के दाहिनी ओर एक हाथी और एक बाघ (शेर) है, जबकि बाईं ओर एक गैंडा और भैंसा दिखाए गए हैं। इन पशुओं के अलावा, स्टूल के नीचे दो बारहसिंगे हैं।** इस तरह की मुद्राएं **2500-1900** ई.पू. की हैं और ये सिंधु घाटी के प्राचीन नगर मोहनजोदड़ो जैसे अनेक पुरास्थलों से बड़ी संख्या में पाई गई हैं।

☞ **घाटी में पाए गए मिट्टी के बर्तन अधिक्तर कुम्हार की चाक पर बनाए गए बर्तन हैं,** हाथ से बनाए गए बर्तन नहीं। इनमें रंग किए हुए बर्तन कम और सादे बर्तन अधिक हैं। ये सादे बर्तन आमतौर पर **लाल चिकनी मिट्टी** के बने हैं।

☞ गहने, बहुमूल्य धातुओं और रत्नों से लेकर हड्डी और पकी हुई मिट्टी तक के बने होते थे। गले के हार, फीते, बाजूबंद और अंगूठियां आमतौर पर पुरुषों और स्त्रियों दोनों के द्वारा समान रूप से पहनी जाती थीं।

☞ **चनहुदड़ों और लेथल** में पाई गई कार्यशालाओं से पता चलता है कि **मनके बनाने का उद्योग** काफी अधिक विकसित था।

☞ **सिंधु घाटी की कलाकृतियों में एक सर्वोत्कृष्ट कृति एक नाचती हुई लड़की यानी नर्तकी की कांस्य प्रतिमा है, जिसकी ऊंचाई लगभग चार इंच है। मोहनजोदड़ो में पाई गई यह मूर्ति तत्कालीन ढलाई कला का एक उत्तम नमूना है।**

☞ **ईसा-पूर्व छठीं शताब्दी** में गंगा घाटी में बौद्ध और जैन धर्मों के रूप में नए धार्मिक और सामाजिक आंदोलनों की शुरुआत हुई। ये दोनों धर्म **श्रमण परंपरा** के अंग थे।

☞ यक्ष पूजा बौद्ध धर्म के आगमन से लेकर और उसके बाद भी काफी लोकप्रिय रही, लेकिन आगे चलकर यह बौद्ध और जैन धर्मों में विलीन हो गई।

☞ मौर्य काल में प्रस्तर स्तंभ संपूर्ण मौर्य साम्राज्य में कई स्थानों पर स्थापित किए गए थे और उन पर शिलालेख उत्कीर्ण किए गए थे। ऐसे स्तंभों की चोटी पर **सांड़, शेर, हाथी** जैसे जानवरों की आकृति उकेरी हुई है।

☞ **सारनाथ** में पाया गया मौर्य कालीन स्तंभ शीर्ष, जो **सिंह शीर्ष** के नाम से प्रसिद्ध है, मौर्य कालीन मूर्ति परंपरा का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। यह आज हमारा राष्ट्रीय प्रतीक भी है। यह बड़ी सावधानी से उकेरा गया है। इसकी गोलाकार वेदी पर दहाड़ते हुए चार शेरों की बड़ी-बड़ी प्रतिमाएं स्थापित हैं और उस वेदी के निचले भाग में घोड़ा, सांड़, हिरन आदि को गतिमान मुद्रा में उकेरा गया है।

☞ इस सिंह शीर्ष के मूलतः पांच अवयव/भाग थे- (i) स्तंभ (शैफ्ट), जो अब कई भागों में टूट चुका है; (ii) एक कमल घंटिका आधार; (iii) उस पर बना हुआ एक ढोल, जिसमें चार पशु दक्षिणावर्त गति के साथ दिखाए गए हैं; (iv) चार तेजस्वी सिंहों की आगे-पीछे जुड़ी हुई आकृतियां और (v) एक सर्वोपरि तल धर्मचक्र, जो कि एक बड़ा पहिया है। यह चक्र इस समय टूटी हालत में है और सारनाथ के स्थलीय संग्रहालय में प्रदर्शित है। **इस सिंह शीर्ष को, उपरिचक्र और कमलाधर के बिना, स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में अपनाया गया है।**

☞ **यह स्तंभ शीर्ष धम्म चक्र प्रवर्तन का मानक प्रतीक है और बुद्ध के जीवन की एक महान ऐतिहासिक घटना का द्योतक है।**

☞ **पटना, विदिशा** और **मथुरा** जैसे अनेक स्थलों पर यक्षों तथा यक्षिणियों की बड़ी-बड़ी मूर्तियां पाई गईं है।

☞ यक्षिणी की प्रतिमा का एक सर्वोत्कृष्ट उदाहरण दीदारगंज, पटना में देखा जा सकता है।

☞ ओडिशा में धौली स्थल पर चट्टान को काटकर बनाए गए विशाल हाथी की आकृति भी मूर्तिकला में रेखांकन लयपारखी की सुंदरता का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस पर सम्राट अशोक का एक शिलालेख भी अंकित है।

☞ **बिहार में बाराबार की पहाड़ियों** में शैलकृत गुफा (चट्टान को काटकर बनाई गई गुफा) है, जिसे लोमष ऋषि की गुफा कहते हैं। इस गुफा का प्रवेश द्वार अर्द्धवृत्ताकार चैत्य चाप (मेहराब) की तरह सजा हुआ है। चैत्य के मेहराब पर एक गतिमान हाथी की प्रतिमा उकेरी हुई है।

☞ सांची का महान स्तूप अशोक के शासनकाल में ईंटों से बनाया गया था और बाद में उसे पत्तर से भी ढक दिया गया और नई-नई चीजें भी लगा दी गईं।

☞ **सिंह शीर्ष सांची में भी पाया गया है** पर वह टूटी-फूटी हालत में है। सिंह शीर्ष वाले स्तंभ बनाने का क्रम परवर्ती काल में भी जारी रहा।

☞ सांची के स्तूप-1 में ऊपर और नीचे दो प्रदक्षिणा पथ हैं इसके चार तोरण हैं, जो सुंदरता से सजे हुए हैं। इन तोरणों पर बुद्ध के जीवन की घटनाओं और जातक कथाओं के अनेक प्रसंगों को प्रस्तुत किया गया है।

☞ **ईसा की पहली शताब्दी** और उसके बाद, उत्तर भारत में गांधार (अब पाकिस्तान में) व मथुरा और दक्षिण भारत में वेंगी (आंध्र प्रदेश) कला उत्पादन के महत्वपूर्ण केंद्र बन गए। मथुरा और गांधार में बुद्ध के प्रतीकात्मक रूप को मानव रूप मिल गया। गांधार की मूर्तिकला की परंपरा में **बैक्ट्रिया, पार्थिया** और स्वयं **गांधार** की स्थानीय परंपरा का संगम हो गया।

☞ मथुरा में बुद्ध की प्रतिमाएं यक्षों की आरंभिक मूर्तियों जैसे बनी हैं, लेकिन गांधार में पाई गई बुद्ध की प्रतिमाओं में यूनानी शैली की विशेषताएं पाई जाती हैं। **मथुरा में आरंभिक जैन तीर्थंकरों और सम्राटों विशेषकर कनिष्क की बिना सिर वाली मूर्तियां एवं चित्र भी पाए गए हैं।**

☞ ईसा की दूसरी शताब्दी में, मथुरा में, प्रतिमाओं में विषयासक्ति केंद्रिकता आ गई, गोलाई बढ़ गई और वे अधिक मांसल हो गईं।

☞ मूर्तिकला का परंपरागत केंद्र मथुरा तो कला के उत्पादन का मुख्य केंद्र बना ही रहा, उसके साथ ही **सारनाथ** और **कौशाम्बी** भी कला उत्पादन के महत्वपूर्ण केंद्रों के रूप में उभर आए।

☞ आंध्र प्रदेश के वेंगी क्षेत्र में अनेक स्तूप स्थल हैं जैसे- जगय्यपेट, अमरावती भट्टी प्रोलुरो, नागार्जुनकोंडा, गोली आदि। अमरावती में एक महाचैत्य है, जिसमें अनेक प्रतिमाएं थीं, जो अब चेन्नई

संग्रहालय अमरावती स्थल के संग्रहालय, नई दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय और लंदन के ब्रिटिश म्यूजियम में सुरक्षित रखी हुई हैं।

☞ अमरावती, नागार्जुनकोंडा और गुंटापल्ली (आंध्र प्रदेश) में बुद्ध की स्वतंत्र प्रतिमाएं भी पाई जाती हैं।

☞ अब तक खुदाई में मिला सबसे बड़ा स्तूप **सन्नति** (जनपद गुलवर्ग, कर्नाटक) में है। यहां एक ऐसा भी स्तूप है, जिसे अमरावती के स्तूप की तरह उभारदार प्रतिमाओं से सजाया गया है।

☞ बुद्ध की प्रतिमाओं के साथ-साथ अन्य बौद्ध प्रतिमाएं, जैसे- **अवलोकितेश्वर, पद्मपाणि, वज्रपाणि, अमिताभ** और **मैत्रेय** जैसे बोधिसत्वों की प्रतिमाएं भी बनाई जाने लगीं।

☞ वास्तुकला के मुख्यतः तीन रूप मिलते हैं- (i) गजपृष्ठी मेहराबी छत वाले चैत्य कक्ष (जो अजंता, पीतलखोड़ा, भाजा में पाए जाते हैं), (ii) गजपृष्ठी मेहराबी छत वाले स्तंभहीन कक्ष (जो महाराष्ट्र के थाना-नादसर में मिलते हैं) और (iii) सपाट छत वाले चतुष्कोणीय कक्ष जिसके पीछे की ओर एक वृत्ताकार छोटा कक्ष होता है (जैसा कि महाराष्ट्र के कोंडिवाइट में पाया गया)।

☞ कार्ला में चट्टानों को काटकर सबसे बड़ा कक्ष बनाया गया था।

☞ जहां तक विहारों का सवाल है, कि वे सभी गुफ़ा स्थलों पर खोदे गए हैं। विहारों की निर्माण योजना (नक्शे में एक बरामदा, बड़ा कक्ष और इस कक्ष की दीवारों के चारों ओर प्रकोष्ठ होते हैं)।

☞ जुन्नार (महाराष्ट्र) में खुदी हुई गुफ़ाओं का सबसे बड़ा समूह है। नगर की पहाड़ियों के चारों ओर 200 से ज्यादा गुफ़ाएं खुदी हुई हैं, जबकि मुंबई के पास **कन्हेरी** में ऐसी **108** गुफ़ाएं हैं। गुफ़ा स्थलों में सबसे महत्वपूर्ण स्थल है- अजंता, पीतलखोड़ा, एलोरा, नासिक, भज, जुन्नार, कार्ला, कन्हेरी की गुफ़ाएं। अजंता, एलोरा और कन्हेरी आज भी फल-फूल रही हैं।

☞ सबसे प्रसिद्ध गुफ़ा स्थल **अजंता** है। यह महाराष्ट्र राज्य के **औरंगाबाद जिले में स्थित है** अजंता में कुल **26 गुफ़ाएं** हैं। इनमें से चार गुफ़ाएं चैत्या गुफ़ाएं हैं, जिनका समय प्रारंभिक चरण यानी ईसा पूर्व दूसरी और पहली शताब्दी (गुफ़ा सं. 19 व 26) और परवर्तीचरण यानी ईसा की पांचवीं शताब्दी (गुफा सं. 19 व 26) है। अजंता ही एक ऐसा उदाहरण है, जहां ईसा पूर्व पहली शताब्दी और ईसा की पांचवीं शताब्दी के चित्र पाए जाते हैं।

☞ **नोटः** वर्तमान में गुफ़ाओं की कुल संख्या 30 हो गई हैं, जबकि क्रम संख्या 29 ही है। 30वीं गुफ़ा (15A) बाद में खोजी गई है।

☞ गुफ़ा सं. 10, 9, 12 व 13 आरंभिक चरण की हैं, गुफ़ा सं. 11,15 व 6 ऊपरी तथा निचली और गुफ़ा सं. 7 ईसा की पांचवीं शताब्दी के उत्तरवर्ती दशकों से पहले की हैं। बाकी सभी गुफ़ाएं पांचवीं शताब्दी के परवर्ती दशकों में ईसा की छठीं शताब्दी के पूर्ववर्ती दशकों के बीच खोदी गई हैं। चैत्य गुफ़ा सं. 19 और 26 विस्तृत रूप से उत्कीर्ण की गई हैं।

☞ गुफ़ा सं. 26 बहुत बड़ी है और भीतर का संपूर्ण बड़ा कक्ष (मंडप) बुद्ध की अनेक प्रतिमाओं से उकेरा गया है और उसमें सबसे बड़ी प्रतिमा **महापरिनिर्वाण** की है।

☞ **औरंगाबाद** जिले में एक अन्य महत्वपूर्ण गुफ़ा स्थल है एलोरा। **यह अजंता से 100 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां बौद्ध, ब्राह्मण व जैन तीनों तरह की 34 गुफ़ाएं हैं।** यही एक ऐसा अनुपम स्थल है जहां ईसा की पांचवीं शताब्दी से लेकर ग्यारहवीं शताब्दी तक के तीन भिन्न-भिन्न धर्मों के मठ/धर्म भवन एक साथ पाए जाते है।

☞ वहां बाहर बौद्ध गुफाएं हैं, जहां बौद्ध धर्म के वज्रयान संप्रदाय की अनेक प्रतिमाएं, जैसे- तारा, महामयूरी, आक्षोभ्य, अवलोकितेश्वर, मैत्रेय, अमिताभ आदि की प्रतिमाएं प्रस्तुत की गई हैं। बौद्ध गुफाएं आकार की दृष्टि से काफ़ी बड़ी हैं और उनमें एक दो, यहां तक कि तीन मंजिलें हैं। उनके स्तंभ विशालकाय हैं। अजंता में भी दो मंजिली गुफ़ाएं खुदी हुई हैं, मगर **एलोरा में तीन मंजिली गुफ़ा बनाना वहां की विशेष उपलब्धि कही जा सकती है।**

☞ ब्राह्मण धर्म की तो एक ही दो मंजिली गुफ़ा यानी गुफ़ा सं.14 है।

☞ ब्राह्मणिक गुफ़ा सं. 13-28 में अनेक प्रतिमाएं पाई जाती हैं। उनमें से कई गुफ़ाएं शैव धर्म को समर्पित हैं परंतु उनमें शिव और विष्णु तथा पौराणिक कथाओं के अनुसार अनेक अवतारों की प्रतिमाएं प्रस्तुत की गई हैं।

☞ गुफ़ा संख्या 16 को **कैलाश लेनी** कहा जाता है। यहां केवल एक अकेली गुफ़ा को काटकर एक शैल मंदिर बनाया गया है।

☞ एक अन्य उल्लेखनीय गुफ़ा स्थल बाघ है। बौद्ध भित्ति-चित्रों वाली **बाघ गुफाएं मध्य प्रदेश के धार जिला मुख्यालय से 97 किमी. की दूरी पर स्थित है।** ये गुफ़ाएँ प्राकृतिक नहीं है, अपितु चट्टानों को काटकर बनाई गई हैं। ये प्राचीन समय में सातवाहन काल में बनाई गई थीं।

☞ मूल नौ गुफ़ाओं में से केवल पांच गुफ़ाएं बची हैं, जिनमें से सभी भिक्षुओं के विहार या चतुष्कोण वाले विश्राम स्थान हैं।

☞ इन पांच गुफ़ाओं में से सबसे महत्वपूर्ण गुफ़ा सं. 4 है, जिसे

आमतौर पर रंगमहल के नाम से जाना जाता है। जहां दीवार और छत पर चित्र अभी भी दिखाई देते हैं।

☞ मुंबई के पास स्थित एलिफ़ैंटा गुफाएं शैव धर्म से संबंधित हैं।

☞ ओडिशा में भी चट्टान काटकर गुफ़ा बनाने की परंपरा रही। **खंडगिरि-उदयगिरि इसके सबसे आरंभिक** उदाहरण हैं, जो भुवनेश्वर के समीप स्थित हैं। ये गुफाएं फैली हुई हैं, जिनमें खारवेल जैन राजाओं के शिलालेख पाए जाते हैं। शिलालेखों के अनुसार, ये गुफ़ाएं जैन मुनियों के लिए थीं।

☞ भोपाल (मध्य प्रदेश) से लगभग 50 किलोमीटर की दूरी पर स्थित सांची यूनेस्को द्वारा घोषित एक विश्व धरोहर/विरासत स्थल है। यहां अनेक छोटे-बड़े स्तूप हैं, जिनमें से तीन मुख्य हैं अर्थात स्तूप सं. 1, स्तूप सं. 2 और स्तूप सं. 3। ऐसा माना जाता है कि स्तूप सं. **1 में बुद्ध के अवशेष हैं।** स्तूप सं. **2 में उनसे कम प्रसिद्ध उन** 10 अर्हतों के अवशेष हैं, जो तीन अलग-अलग पीढ़ियों के थे, उनके नाम उनकी अवशेष पेटिकाओं पर लिखे हुए हैं और स्तूप सं. **3 में सारिपुत्त और महामौग्गलायन के अवशेष रखे हैं।**

☞ स्तूप सं. 1 सबसे पुराना स्तूप है, लेकिन स्तूप सं. 2 की वेदिका पर जो आकृतियां उकेरी गई हैं, वे स्तूप सं. 1 से पहले की है। जातक इन आख्यानों के महत्वपूर्ण अंग हैं।

☞ अजंता की गुफ़ा संख्या 1 में पूजागृह से पहले स्थित आंतरिक बड़े कक्ष की पिछली दीवार चित्रित है। इनमें बोधिसत्व को एक पद्म (कमल) पकड़े हुए दिखाया गया है।

☞ पद्मपाणि की उपर्युक्त आकृति के दूसरी ओर वज्रपाणि बोधिसत्व को चित्रित किया गया है। वज्रपाणि दाहिने हाथ में वज्र लिए हुए और सिर पर मुकुट पहने हुए है।

☞ मार विजय का विषय अंजता की कई गुफ़ाओं में चित्रित किया गया है। यही एक मूर्तिकलात्मक प्रणिरूपण है, जिसे अंजता की गुफा संख्या 26 की दाहिनी दीवार पर प्रस्तुत किया गया है।

☞ **बादामी**, **कर्नाटक** राज्य में स्थित है। यह चालुक्य वंश के आरंभिक राजाओं की राजधानी थी, जिन्होंने 543 ई. से 598 ई. तक शासन किया था। वाकाटक शासन के पतन के बाद चालुक्यों ने दक्कन/दक्षिण भारत में अपनी सत्ता स्थापित की। **चालुक्य नरेश मंगलेश** ने बादामी गुफाओं की खुदाई का संरक्षण किया। वह चालुक्य नरेश **पुलकेशिन प्रथम** का छोटा पुत्र और **कीर्तिवर्मन प्रथम** का भाई था। गुफा संख्या 4 के शिलालेख में **578-579 ई**. का उल्लेख है और यह भी बताया गया है कि गुफा बहुत सुंदर बनी थी और विष्णु की प्रतिमा को समर्पित की गई थी।

☞ पल्लव राजा जो दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में राजसत्ता में आए थे, बड़े कला प्रेमी और कलाओं के संरक्षक थे। महेंद्रवर्मन प्रथम, जिसने सातवीं शताब्दी में राज किया था, उसने **पनामलई, मंडगपट्ट** और **कांचीपुरम** (तमिलनाडु) में मंदिरों का निर्माण करवाया था। **महेंद्रवर्मन प्रथम अनेक उपाधियों से विभूषित था, जैसे– विचित्रचित्त (जिज्ञासु मन वाला), चिकारपुलि (कलाकार केशरी), चैत्यकारी (मंदिर निर्माता)।**

☞ कांचीपुरम मंदिर के चित्र तत्कालीन पल्लव नरेश राजसिंह के संरक्षण में बने थे। जब पांड्य सत्ता में आए, तो उन्होंने भी कला को संरक्षण प्रदान किया। **तिरुमलईपुरम की गुफाएं** और **सित्तनवासल (पुदुकोट्टई, तमिलनाडु)** स्थित जैन गुफाएं इसका जीवंत उदाहरण हैं।

☞ देवालय बनाने और उन्हें उत्कीर्णित आकृतियों तथा चित्रों से सजाने-संवारने की परंपरा चोल नरेशों के शासनकाल में भी जारी रही। जिन्होंने नौवीं से तेरहवीं शताब्दी तक इस प्रदेश पर शासन किया था। लेकिन ग्यारहवीं शताब्दी में, जब चोल राजा अपनी शक्ति के चरम शिखर पर पहुंचे, तो चोल कला और स्थापत्य कला (वास्तु कला) के सर्वोत्कृष्ट नमूने प्रकट होने लगे। **तमिलनाडु में तंजावुर, गंगैकोंडचोलपुरम और दारासुरम** के मंदिर क्रमशः राजराज चोल, उसके पुत्र राजेंद्र चोल और राजराज चोल द्वितीय के शासनकाल में बने। सबसे अधिक महत्वपूर्ण चित्र **बृहदेश्वर मंदिर तंजावुर** में पाए जाते हैं।

☞ तीसरी शताब्दी में चोल वंश के पतन के बाद विजयनगर के राजवंश (चौदहवीं से सोलहवीं शताब्दी) ने अपना आधिपत्य जमा लिया और **हम्पी से त्रिची** तक के समस्त क्षेत्र को अपने नियंत्रण में ले लिया और हम्पी को अपने राज्य की राजधानी बनाया।

☞ **हम्पी में, विरुपाक्ष** मंदिर में मंडप की भीतरी छत पर अनेक चित्र बने हुए हैं, जो उस वंश के इतिहास की घटनाओं तथा रामायण और महाभारत के प्रसंगों को दर्शाते हैं।

☞ सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के नायक कालीन चित्र तिरुपराकुनरम, श्रीरंगम, तिरुवरूर में देखे जा सकते हैं।

☞ आरंभिक चित्रों में **वर्द्धमान महावीर** के जीवन के संदर्भ का चित्रण किया गया है।

☞ नायक कालीन चित्रों में महाभारत और रामायण के प्रसंग और कृष्णलीला के दृश्य भी चित्रित किए गए हैं। तिरुवरूर में एक चित्रफलक में **मुचुकुंद** की कथा चित्रित की गई है। **चिदंबरम,** तमिलनाडु में अनेक चित्र फलकों में शिव और विष्णु से

संबंधित कथाएं चित्रित हैं। **शिव को भिक्षाटन मूर्ति और विष्णु को मोहिनी रूप आदि में चित्रित किया गया** है।

☞ केरल के चित्रकारों ने (सोलहवीं से अठारहवीं शताब्दी के दौरान) स्वयं अपनी ही एक चित्रात्मक भाषा तथा तकनीक का विकास कर लिया था।

☞ **कथककलि, कलम, ऐझुथु (केरल में अनुष्ठान इत्यादि के समय भूमि पर की जाने वाली चित्रकारी)** जैसी समकालीन परंपराओं से प्रभावित होकर एक ऐसी भाषा विकसित कर ली, जिसमें कंपनशील और चमकदार रंगों का प्रयोग होता था और मानव आकृतियों को त्रिआयामी रूप में प्रस्तुत किया जा सकता था।

☞ हर मंदिर में एक **प्रधान या अधिष्ठाता देवता** की प्रतिमा होती थी। मंदिरों के पूजा गृह **तीन** प्रकार के होते थे- (1) संधर किस्म (जिसमें प्रदक्षिणा पथ होता है), (2) निरंधर किस्म (जिसमें प्रदक्षिण पथ नहीं होता है) और (3) सर्वतोभद्र (जिसमें सब तरफ से प्रवेश किया जा सकता है)। कुछ महत्वपूर्ण मंदिर **उत्तर प्रदेश में देवगढ़** तथा **मध्य प्रदेश में एरण व नचना-कुठार** और विदिशा के पास उदयगिरि में पाए जाते हैं। ये मंदिर साधारण श्रेणी के हैं जिनमें बरामदा, बड़ा कक्ष/मंडप और पीछे पूजा गृह है।

☞ हिंदू मंदिर निम्न भागों से निर्मित होता है–

(1) **गर्भगृह**, जो प्रारंभिक मंदिरों में एक छोटा-सा प्रकोष्ठ होता था। उसमें प्रवेश के लिए एक छोटा-सा द्वार होता था। लेकिन समय के साथ-साथ इस प्रकोष्ठ का आकार बढ़ता गया। गर्भगृह में मंदिर के **मुख्य अधिष्ठाता देवता** की मूर्ति को स्थापित किया जाता है ।

(2) **मंडप,** अर्थात मंदिर का प्रवेश कक्ष, जो कि काफी बड़ा होता है। इसमें काफी बड़ी संख्या में भक्तगण इकट्ठा हो सकते हैं।

(3) पूर्वोत्तर काल में इन पर शिखर बनाए जाने लगे, जिसे **उत्तर भारत में शिखर और दक्षिण भारत में विमान** कहा जाने लगा।

(4) **वाहन,** अर्थात मंदिर के अधिष्ठता देवता की सवारी। वाहन को एक स्तंभ या ध्वज के साथ गर्भगृह के साथ कुछ दूरी पर रखा जाने लगा।

☞ भारत में मंदिरों की दो श्रेणियों को जाना जाता है– **उत्तर भारत की 'नागर' शैली** और **दक्षिण भारत की 'द्रविण' शैली**। कुछ विद्वानों के मतानुसार **'वेसर' शैली** भी एक स्वतंत्र शैली है, जिसमें नागर और द्रविड़, दोनों शैलियों की कुछ चुनी हुई विशेषताओं का मिश्रण पाया जाता है।

☞ नागर शैली के मंदिरों में, **गंगा और यमुना जैसी नदी देवियों** को **गर्भगृह के प्रवेश द्वार के पास रखा जाता** है, जबकि द्रविड़ मंदिरों में **द्वारपालों को आमतौर पर मंदिर के मुख्य द्वार यानी गोपुरम पर रखा जाता है**। मिथुनों नवग्रहों (नौ मांगलिक ग्रहों) और यक्षों को द्वार रक्षा के लिए प्रवेश द्वार पर रखा जाता है। मुख्य देवता यानी मंदिर के अधिष्ठाता देवता के विभिन्न रूपों या यक्षों को गर्भगृह की बाहरी दीवारों पर दर्शाया जाता है। आठ दिशाओं के स्वामी यानी अष्टदिग्पालों को गर्भगृह की बाहरी दीवारों और मंदिर की बाहरी दीवारों पर अपनी-अपनी दिशा की ओर अभिमुख दिखाया जाता है।

☞ उत्तर भारत में मंदिर स्थापत्य/वास्तुकला की जो शैली लोकप्रिय हुई उसे **नागर शैली** कहा जाता है। इस शैली की एक आम बात यह थी कि संपूर्ण मंदिर एक विशाल **चबूतरे (वेदी)** पर बनाया जाता है और उस तक पहुंचने के लिए सीढ़ियां होती हैं। मंदिर में एक **घुमावदार गुम्बद** होता है, जिसे **शिखर** कहा जाता है।

☞ एक साधारण शिखर को जिसका आधार वर्गाकार होता है और दीवारें भीतर की ओर मुड़कर चोटी पर एक बिंदु पर मिलती हैं, उसे आमतौर पर **रेखा-प्रासाद** कहा जाता है।

☞ 'नागर' में एक दूसरा प्रमुख वास्तु रूप है फमसाना किस्म के भवन, जो रेखा-प्रासाद की तुलना में अधिक चौड़े और ऊंचाई में कुछ छोटे होते हैं।

☞ फमसाना की छतें भीतर की ओर नहीं मुड़ी होती, बल्कि वे सीधे ऊपर की ओर ढलवा होती हैं।

☞ **वलभी,** नागर शैली की उप-श्रेणी कहलाती है। वलभी श्रेणी के वर्गाकार मंदिरों में मेहराबदार छतों से शिखर का निर्माण होता है। इस मेहराबी कक्ष का किनारा गोल होता है। यह शकटाकार यानी बांस या लकड़ी के बने छकड़े की तरह होता है। ऐसा छकड़ा पुराने जमाने में बैलों से खींचा जाता होगा। ऐसे भवनों को आमतौर पर शकटाकार भवन (wagon vaulted building) कहा जाता है।

☞ गुप्तकाल के सबसे पुराने संरचनात्मक मंदिर जो आज भी मौजूद हैं, मध्य प्रदेश में पाए जाते हैं।

☞ ऐसे दो मंदिर आज बचे हुए हैं, उनमें से एक उदयगिरि में है जो विदिशा के सीमांत क्षेत्र में स्थित है तथा गुफा मंदिरों के एक बड़े हिंदू शंकुल का भाग है और दूसरा मंदिर सांची में स्तूप के निकट स्थित है। यह समतल छत वाला प्रथम मंदिर है।

- **देवगढ़** (जिला ललितपुर, उत्तर प्रदेश) का मंदिर छठीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में बनाया गया था। इसे गुप्तकलीन मंदिर स्थापत्य का एक श्रेष्ठ उदाहरण माना जाता है। **यह मंदिर वास्तुकला की पंचायतन शैली** में निर्मित है। जिसके अनुसार, मुख्य देवालय को एक वर्गाकार वेदी पर बनाया जाता है और चार कोनों में चार छोटे सहायक देवालय बनाए जाते हैं (इस प्रकार कुल मिलाकर पांच छोटे-बड़े देवालय बनाए जाते हैं, इसीलिए इस शैली को **पंचायतन शैली** कहा जाता है)। इसका ऊंचा और वक्ररेखीय शिखर भी इसी काल की पुष्टि करता है। शिखर **रेखा-प्रासाद शैली** पर बना है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह मंदिर श्रेष्ठ नागर शैली का आरंभिक उदाहरण है।
- पश्चिमाभिमुख मंदिर का प्रवेश द्वार बहुत भव्य है। इसके बाएं कोने पर गंगा और दाएं कोने पर यमुना हैं। इसमें विष्णु के अनेक रूप प्रस्तुत किए गए हैं, जिसके कारण लोगों का यह मानना है कि इसके चारों उप-देवालयों में भी विष्णु के अवतारों की मूर्तियां ही स्थापित थीं। इसीलिए लोग इसे भ्रमवश दशावतार मंदिर समझने लगे।
- मंदिर की दीवारों पर विष्णु की तीन उद्भृतियं (उभरी आकृतियां) हैं। दक्षिणी दीवार पर शेषशयन, पूर्वी दीवार पर नर-नारायण और पश्चिमी दीवार पर गजेंद्रमोक्ष का दृश्य चित्रित है।
- **खजुराहो** का **लक्ष्मण मंदिर** विष्णु को समर्पित है। यह मंदिर चंदेलवंशीय राजा **धंग द्वारा 954 ई.** में बनाया गया था।
- इसके शिखर के अंत में एक नालीदार चक्रिका (तश्तरी) है, जिसे **आमलक** कहा जाता है और उस पर एक कलश स्थापित है।
- **खजुराहो स्थित कंदरिया महादेव मंदिर** का निर्माण भारतीय मंदिर स्थापत्य शैली की पराकाष्ठा है।
- खजुराहो के मंदिर अपनी कामोद्दीप एवं श्रृंगार प्रधान प्रतिमाओं के लिए भी बहुत प्रसिद्ध हैं। इनमें श्रृंगार रस को उतना ही महत्व दिया गया है जितना कि मानव की आध्यात्मिक खोज को और इसे पूर्णब्रह्म का ही एक महत्वपूर्ण अंश माना जाता था।
- खजुराहो में बहुत से मंदिर हैं। उनमें से अधिकांश हिंदू देवी-देवताओं के हैं और कुछ जैन मंदिर भी हैं, इनमें से चौसठ योगिनी मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह दसवीं शताब्दी से पहले का है।
- **मोढ़ेरा (गुजरात) का सूर्य मंदिर** ग्यारहवीं शताब्दी के आरंभिक काल की रचना है। इसे **सोलंकी राजवंश के राजा भीमदेव प्रथम ने 1026 ई.** में बनाया था। सूर्य मंदिर में सामने की ओर एक अत्यंत विशाल वर्गाकार जलाशय है, जिसमें सीढ़ियों की सहायता से पानी तक पहुंचा जा सकता है। इसे सूर्यकुंड कहते हैं।
- गुजरात की काष्ठ-उत्कीर्णन की परंपरा का प्रभाव इस मंदिर में उपलब्ध प्रचुर उत्कीर्णन तथा मूर्ति निर्माण के कार्यों पर स्पष्ट दिखाई देता है।
- चूंकि मंदिर पूर्वाभिमुख है इसलिए हर वर्ष विषुव के समय (यानी 21 मार्च और 23 सितंबर को) जब दिन-रात बराबर होते हैं, सूर्य सीधे केंद्रीय देवालय पर चमकता है।
- ओडिशा के अधिकांश ऐतिहासिक स्थल प्राचीन कलिंग क्षेत्र यानी आधुनिक पुरी जिले में स्थित हैं, जिसमें भुवनेश्वर यानी पुराना त्रिभुवनेश्वर, पुरी और कोर्णाक के इलाके शामिल हैं। ओडिशा के मंदिरों की शैली एक अलग किस्म की है, जिसे हम **नागर शैली की उपशैली** कह सकते हैं।
- आमतौर पर शिखर जिसे **ओडिशा में देवल** कहते हैं, इस उप-शैली के अंतर्गत लगभग चोटी तक एकदम ऊर्ध्वाधर यानी बिलकुल सीधा खड़ा होता है पर चोटी पर जाकर अचानक तेजी से भीतर की ओर मुड़ जाता है।
- इन मंदिरों में देवालयों से पहले सामान्य रूप से मंडल होते हैं, जिन्हें ओडिशा में **जगमोहन** कहा जाता है।
- बंगाल की खाड़ी के तट पर स्थित कोर्णाक में भव्य सूर्य मंदिर के अब भग्नावशेष ही देखने को मिलते हैं।
- यह मंदिर 1240 ई. के आस-पास बनाया गया था। इसका शिखर बहुत भारी भरकम था और कहते हैं कि उसकी ऊंचाई **70 मीटर** थी। इसका स्थल इसके भार को न सह सका और यह शिखर उन्नीसवीं शताब्दी में धराशायी हो गया। उसमें से अब जगमोहन यानी नृत्य मंडप ही बचा है।
- सूर्य मंदिर एक ऊंचे आधार (वेदी) पर स्थित है। इसकी दीवारें व्यापक रूप से आलंकरिक उत्कीर्णन से ढकी हुई हैं।
- इनमें बड़े-बड़े पहियों के 12 जोड़े हैं, पहियों में आरे और नाभिकेंद्र (हब) हैं, जो सूर्य देव की पौराणिक कथा का स्मरण कराते हैं जिसके अनुसार सूर्य सात घोड़ों द्वारा खीचें जा रहे रथ पर सवार होते हैं।
- मंदिर की दक्षिणी दीवार पर सूर्य की एक विशाल प्रतिमा है, जो हरे पत्थर की बनी हुई है।
- ऐसा कहा जाता है कि पहले ऐसी तीन आकृतियां थीं, उनमें से हर एक आकृति एक अलग किस्म के पत्थर पर बनी हुई अलग-अलग दिशा की ओर अभिमुख थी।

☞ चौथी दीवार पर मंदिर के भीतर जाने का दरवाजा बना हुआ था, जहां से सूर्य की वास्तविक किरणें गर्भगृह में प्रवेश करती थीं।

☞ कश्मीर का **कारकोटा काल** वास्तुकला की दृष्टि से अत्यधिक उल्लेखनीय है। उन्होंने बहुत से मंदिर बनाए जिनमें से पंड्रेथान में निर्मित मंदिर सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

☞ मंदिर आठवीं और नौवीं शताब्दी में बनाए गए थे। देवालय के पास जलाशय होने की परंपरा का पालन करते हुए, पंडेरनाथ का मंदिर जलाशय के बीच में बनी हुई एक वेदी पर निर्मित है।

☞ द्रविड़ मंदिर चारों ओर एक चहारदीवारी से घिरा होता है। इस चहारदीवारी के बीच में प्रवेश द्वार होते हैं, जिन्हें **गोपुरम्** कहते हैं। मंदिर के गुम्बद का रूप जिसे तमिलनाडु में विमान कहा जाता है, मुख्यतः एक सीढ़ीदार पिरामिड की तरह होता है, जो ऊपर की ओर ज्यामितीय रूप से उठा होता है, न कि उत्तर भारत के मंदिरों की तरह मोड़दार शिखर के रूप में।

☞ दक्षिण भारतीय मंदिरों में, शिखर शब्द का प्रयोग मंदिर की चोटी पर स्थित मुकुट जैसे तत्व के लिए किया जाता है, जिसकी शक्ल आमतौर पर एक छोटी स्तूपिका या एक अष्ठभुजी गुमटी जैसी होती है।

☞ दक्षिण के सबसे पवित्र माने जाने वाले कुछ मंदिरों में आप देखेंगे कि मुख्य मंदिर, जिसमें गर्भगृह बना होता है और समय के साथ जब नगर की जनसंख्या और आकार बढ़ जाता है, तो मंदिर भी बड़ा हो जाता है और उसके चारों ओर नई चहारदीवारी बनाने की भी जरूरत पड़ जाती है। इसकी ऊंचाई इससे पहले वाली दीवार से ज्यादा होगी और उसका गोपुरम् भी पहले वाले गोपुरम् से अधिक ऊंचा होगा।

☞ तमिलनाडु में कांचीपुरम, तंजावुर (तंजौर), मदुरई और कुम्भकोणम सबसे प्रसिद्ध मंदिर नगर हैं, जहां आठवीं से बारहवीं शताब्दी के दौरान मंदिर की भूमिका केवल धार्मिक कार्यों तक ही सीमित नहीं रही। मंदिर प्रशासन के केंद्र बन गए, जिनके नियंत्रण में बेशुमार जमीन होती थी।

☞ आरंभिक भवन शैलकृत (चट्टानों को काटकर बनाए गए) थे, जबकि बाद वाले भवन संरचनात्मक (रोड़ा-पत्थर आदि से चुनकर बनाए गए) थे।

☞ आरंभिक भवनों को आमतौर पर **महेंद्रवर्मन प्रथम**, जो कि कर्नाटक के **चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय** का समकालीन था, के शासनकाल का माना जाता है।

☞ **नरसिंहवर्मन प्रथम** जिसे मामल्ल भी कहा जाता है, 640 ई. के आस-पास पल्लव राजगद्दी पर बैठा था।

☞ उसने पुलकेशिन द्वितीय को हराकर उसके हाथों अपने पिता को मिली हार का बदला लिया और महाबलीपुरम में अनेक भवनों के निर्माण का कार्य आरंभ किया।

☞ इसीलिए **महाबलीपुरम** को उसके नाम का अनुकरण करते हुए **मामल्लपुरम** कहा गया।

☞ महाबलीपुरम का तटीय मंदिर बाद में संभवतः नरसिंहवर्मन द्वितीय (700-728 ई.), जिन्हें राजसिंह भी कहा जाता है, के द्वारा बनवाया गया।

☞ मंदिर का मुंह समुद्र की ओर करके इसे पूर्वाभिमुख बना दिया गया। परंतु यदि आप इसे गौर से देखें तो पाएंगे कि इस मंदिर में वास्तव में तीन देवालय हैं, जिनमें से दो शिव के हैं। उनमें से एक पूर्वाभिमुख और दूसरा पश्चिमाभिमुख है और उन दोनों के बीच अनंतशयनम रूप में विष्णु का मंदिर है। यह एक असामान्य बात है क्योंकि मंदिरों में आमतौर पर एक ही मुख्य देवालय होता है, पूजा के तीन स्थान नहीं होते।

☞ **तंजावुर का भव्य शिव मंदिर जिसे राजराजेश्वर या बृहदेश्वर मंदिर कहा जाता है**, समस्त भारतीय मंदिरों में सबसे बड़ा और ऊंचा है। **इसका निर्माण कार्य 1009 ई. के आस-पास राजराज चोल** द्वारा पूरा कराया गया था।

☞ चोल सम्राट द्वारा निर्मित कराया गया बृहदेश्वर मंदिर पूर्ववर्ती पल्लव, चालुक्य और पांड्य राजाओं द्वारा बनाए गए किसी भी मंदिर से आकार-प्रकार को देखते हुए बड़ा है।

☞ इसकी बहुमंजिला विमान 70 मीटर (लगभग 230 फीट) की गगनचुंबी ऊंचाई तक खड़ा है। जिसकी चोटी पर एक एकाश्म शिखर है, जो अष्टभुजा गुम्बद की शक्ल की स्तूपिका है।

☞ मंदिर के प्रमुख देवता शिव हैं, जो एक अत्यंत विशाल लिंग के रूप में एक दो मंजिलें गर्भगृह में स्थापित हैं।

☞ 750 ई. के आस-पास तक दक्कन क्षेत्र पर आरंभिक पश्चिमी चालुक्यों का नियंत्रण राष्ट्रकूटों द्वारा हथिया लिया गया था। उनकी वास्तुकला की सबसे बड़ी उपलब्धि थी **एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर**, जिसे हम भारतीय शैलकृत वास्तुकला की कम-से-कम एक हजार वर्ष पूर्व की परंपरा की पराकाष्ठा कह सकते हैं।

☞ यह मंदिर पूर्णतया द्रविड़ शैली में निर्मित है और इसके साथ नंदी का देवालय भी बना है। चूंकि यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है, जो कैलाशवासी हैं। इसलिए इसे कैलाशनाथ मंदिर की संज्ञा दी गई है।

☞ महत्वपूर्ण बात तो यह है कि यह सब एक जीवंत शैलखंड पर उकेरकर बनाया गया है। पहले एक एकाश्म पहाड़ी के एक

हिस्से को धैर्यपूर्वक उकेरा (काटा) गया और इस संपूर्ण बहुमंजिली संरचना को पीछे छोड़ दिया गया।

☞ दक्कन के दक्षिणी भाग यानी कर्नाटक के क्षेत्र में वेसर वास्तुकला की संकर (मिली-जुली) शैलियों के सर्वाधिक प्रयोग देखने को मिलते हैं। **पुलकेशिन प्रथम** ने यहां सर्वप्रथम पश्चिमी चालुक्य राज्य स्थापित किया, जब उसने 543 ई. में बादामी के आस-पास के इलाके को अपने कब्जे में ले लिया।

☞ आरंभिक पश्चिमी चालुक्य शासकों ने अधिकांश दक्कन पर आठवीं शताब्दी के मध्य भाग तक शासन किया, जब तक कि राष्ट्रकूटों ने उनसे सत्ता नहीं छीन ली।

☞ आरंभिक चालुक्यों ने पहले शैलकृत गुफाएं बनाई और फिर उन्होंने संरचनात्मक मंदिर बनवाए।

☞ चालुक्य मंदिरों का एक सर्वोत्तम उदाहरण **पट्टडकल में स्थित विरुपाक्ष मंदिर** है। यह मंदिर विक्रमादित्य द्वितीय के शासनकाल (733-44 ई.) में उसकी **पटरानी लोका महादेवी** द्वारा बनवाया गया था।

☞ यहां स्थित एक अन्य महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल **पापनाथ मंदिर** है, जो कि भगवान शिव को समर्पित है।

☞ चालुक्य मंदिरों की परंपरा के विपरीत बादामी से मात्र पांच किलोमीटर की दूरी पर स्थित **महाकूट मंदिर** तथा **आलमपुर** स्थित **स्वर्ग ब्रह्म मंदिर** में राजस्थान एवं ओडिशा की उत्तरी शैली की झलक देखने को मिलती है।

☞ **एहोल (कर्नाटक)** का दुर्गा मंदिर इससे भी पूर्व की **गजपृष्ठाकार** बौद्ध चैत्यों के समान शैली में निर्मित है।

☞ एहोल के **लाडखान मंदिर** का जिक्र करना भी जरूरी होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि इसके निर्माण में पहाड़ी क्षेत्रों के लकड़ी के छत वाले मंदिरों से, प्रेरणा मिली होगी, दोनों के बीच अंतर केवल इतना ही है कि यह मंदिर पत्थर का बना है, लकड़ी का नहीं।

☞ चोलों और पांड्यों की शक्ति के अवसान के साथ, कर्नाटक के **होयसलों** ने दक्षिण भारत में प्रमुखता प्राप्त कर ली और वे वास्तुकला के महत्वपूर्ण संरक्षक बन गए। उनकी सत्ता का केंद्र मैसूर था। दक्षिणी दक्कन में लगभग 100 मंदिरों के अवशेष मिले हैं किंतु उनमें से तीन सबसे अधिक उल्लेखनीय हैं अर्थात **बेलूर, हलेबिड** और **सोमनाथपुर** के मंदिर।

☞ इनमें अनेक आगे बढ़े हुए कोण होते हैं, जिनसे इन मंदिरों की योजना तारे जैसी दिखाई देने लगती है। इसीलिए इस योजना को **तारकीय योजना** कहा जाता है।

☞ **कर्नाटक में हलेबिड में स्थित होयसलेश्वर मंदिर** होयसल नरेश द्वारा **1150 ई.** में गहरे रंग के परतदार पत्थर (शिस्ट) से बनाया गया था। होयसल मंदिर को **संकर या वेसर शैली** का मंदिर कहा जाता है क्योंकि उनकी शैली द्रविड़ और नागर दोनों शैलियों से लेकर बीच की शैली है।

☞ **हलेबिड का मंदिर 'नटराज' के रूप में शिव** को समर्पित है।

☞ 1336 ई. में स्थापित विजयनगर ने **इटली के निकोलो डिकांटी**, **पुर्तगाल के डोमिंगो पेइस**, **फर्नाओ नयूमिश** तथा **दुआर्ते बार्बोसा** और **अफगान अब्द अल-रज्जाक** जैसे अंतरराष्ट्रीय यात्रियों को आकर्षित किया, जिन्होंने इस नगर का विस्तृत विवरण दिया है।

☞ बोधगया निश्चित रूप से एक अत्यंत प्रसिद्ध बौद्ध स्थल है। इस तीर्थ स्थल की पूजा तभी से की जाती रही है जब सिद्धार्थ को ज्ञान यानी बुद्धत्व प्राप्त हो गया था और वे गौतम बुद्ध बन गए थे। यहां के बोधवृक्ष का तो महत्व है ही क्योंकि सिद्धार्थ ने इसी की छाया में बुद्धत्व प्राप्त किया था, लेकिन बोधगया का महाबोधि मंदिर उस समय ईंटों से बनाए जाने वाले महत्वपूर्ण भवनों की याद दिलाता है।

☞ बोधिवृक्ष के नीचे सर्वप्रथम जो देवालय बना था, उसका निर्माता सम्राट अशोक था।

☞ **नालंदा का मठीय विश्वविद्यालय** एक महाविहार है, क्योंकि यह विभिन्न आकारों के अनेक मठों का संकुल है। आज तक, इस प्राचीन शिक्षा केंद्र का एक छोटा हिस्सा ही खोदा गया है क्योंकि इसका अधिकांश भाग समकालीन सभ्यता के नीचे दबा हुआ है इसलिए यहां आगे खुदाई करना लगभग असंभव है।

☞ नालंदा के बारे में अधिकांश जानकारी **चीनी यात्री ह्वेनसांग** के अभिलेखों पर आधारित है। इनमें कहा गया है कि एक मठ की **नींव कुमार गुप्त प्रथम** द्वारा पांचवीं शताब्दी में डाली गई थी और यह निर्माण कार्य परवर्ती सम्राटों के शासनकाल में भी चलता रहा।

☞ बौद्ध धर्म के सभी **तीन संप्रदायों - थेरवाद, महायान और वज्रयान** - के सिद्धांत यहां पढ़ाए जाते थे और उत्तर चीन, तिब्बत और मध्य एशिया तथा दक्षिण-पूर्व एशिया में भी श्रीलंका, थाईलैंड, बर्मा और अनेक अन्य देशों के बौद्ध भिक्षु बौद्ध धर्म की शिक्षा प्राप्त करने के लिए नालंदा और इसके आस-पास स्थित बोधगया तथा कुर्किहार आदि केंद्रों में आते थे।

☞ नौवीं शताब्दी तक आते-आते, सारनाथ की गुप्त शैली और बिहार की स्थानीय परंपरा तथा मध्य भारत की परंपरा के संगम (संश्लेषण) से एक नई शैली का अविर्भाव हुआ, जिसे मूर्तिकला की नालंदा शैली कहा जा सकता है।

- ☞ नालंदा की कांस्य मूर्तियों का काल सातवीं और आठवीं शताब्दी से लगभग बारहवीं शताब्दी तक का है।
- ☞ ये पाल राजाओं के शासनकाल में बनी धातु की प्रतिमाओं का काफी बड़ा भाग हैं।
- ☞ नालंदा की प्रतिमाएं प्रारंभ से महायान संप्रदाय के बौद्ध देवी-देवताओं का प्रतिरूपण करती थीं।
- ☞ छत्तीसगढ़ में स्थित **सीरपुर** आरंभिक प्राचीन ओडिशी शैली (550-800 ई.) का स्थल था जहां हिंदू तथा बौद्ध दोनों प्रकार के देवालय थे।
- ☞ मध्य भारत में देवगढ़, खजुराहो, चंदेरी और ग्वालियर में जैन मंदिरों के कुछ उत्कृष्ट उदाहरण पाए जाते हैं। कर्नाटक में जैन मंदिरों की समृद्ध धरोहर सुरक्षित है, जिनमें **गोमतेश्वर में भगवान बाहुबली की ग्रेनाइट पत्थर की मूर्ति** विशेष रूप से उल्लेखनीय है। श्रवणबेलगोला स्थित यह विशाल प्रतिमा 18 मीटर यानी 57 फुट ऊंची है और विश्वभर में एक पत्थर से बनी बिना किसी सहारे के खड़ी, सबसे लंबी मूर्ति है। इसे मैसूर के गंग राजाओं के सेनापति एवं प्रधानमंत्री **चामुण्डाराय** द्वारा बनवाया गया था।
- ☞ राजस्थान में **माउंट आबू पर स्थित जैन मंदिर विमल शाह** द्वारा बनाए गए थे। इनका बाहरी हिस्सा बहुत सादा है, जबकि भीतरी भाग बढ़िया संगमरमर तथा भारी मूर्तिकलात्मक साज-सज्जा से अलंकृत है, जहां गहरी कटाई बेलबूटों जैसी प्रतीत होती है।
- ☞ महाबलीपुरम पल्लव काल का एक महत्वपूर्ण पट्टनगर है, जहां अनेक शैलकृत एवं स्वतंत्र खड़े मंदिरों का निर्माण सातवीं-आठवीं शताब्दी में हुआ। महाबलीपुरम का यह विशाल प्रतिमा फलक (पैनल) जिसकी ऊंचाई 15 मीटर एवं लंबाई 30 मीटर है, विश्व में इस प्रकार का सबसे बड़ा और प्राचीनतम पैनल है। इसमें चट्टानों के मध्य एक प्राकृतिक दरार है, जिसका उपयोग शिल्पियों द्वारा इतनी सुंदरता से किया गया है कि इस दरार से बहकर पानी नीचे बने कुण्ड में एकत्रित होता है।
- ☞ यह **गंगावतरण** का प्रकरण है और कुछ इसे **किरातार्जुनीय** की कथा से जोड़ते हैं और कुछ अर्जुन की तपस्या से। किरातार्जुनीयम पल्लव काल में **कवि भारवि** की लोकप्रिय रचना थी। अन्य विद्वानों के अनुसार, यह पैनल एक पल्लव राजा की प्रशस्ति है, जो कुण्ड के मध्य पैनल की अनूठी पृष्ठभूमि में बैठता होगा।
- ☞ रिलीफ पैनल में एक मंदिर को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, जिसके सामने तपस्वी और श्रद्धालु बैठे हैं। इसके ऊपर एक टांग पर खड़े योगी का चित्रण है, जिसके हाथ सिर के ऊपर उठे हुए हैं जिसे कुछ लोग भगीरथ एवं कुछ अर्जुन मानते हैं।
- ☞ अर्जुन ने शिव से पाशुपत अस्त्र पाने के लिए तपस्या की थी, जबकि भगीरथ ने गंगा को पृथ्वी पर अवतरित करने के लिए, इसके बगल में वरद मुद्रा में शिव को खड़ा दिखाया गया है। इस हाथ के नीचे खड़ा छोटा-सा गण शक्तिशाली पाशुपत अस्त्र का मानवीकरण है।
- ☞ इनमें सबसे हास्यास्पद चित्रण एक बिल्ली का है, जो भगीरथ अथवा अर्जुन की नकल करते हुए अपने पीछे के पंजों पर खड़ी होकर आगे के पंजों को हवा में उठाए हुए है। ध्यान से देखने पर पता चलता है कि यह बिल्ली, चूहों से घिरी हुई है, जो उसकी साधना भंग नहीं कर पा रहे हैं। संभवतः यह कलाकार द्वारा भागीरथ अथवा अर्जुन के कठोर तप का सांकेतिक चित्रण है, जो अपने आस-पास की स्थिति से विचलित हुए बिना स्थिर खड़ी है।
- ☞ कैलाश पर्वत को हिलाते हुए रावण को एलोरा की गुफा में कई बार चित्रित किया गया है। इनमें सबसे उल्लेखनीय आकृति एलोरा की गुफा संख्या 16 के कैलाशनाथ मंदिर की बाईं दीवार पर प्रस्तुत की गई है। यह आकृति आठवीं शताब्दी में बनाई गई थी। इसमें रावण को कैलाश पर्वत हिलाते हुए दिखाया गया है, जिस पर शिव और पार्वती लोगों के साथ विराजमान हैं।
- ☞ गुजरात और राजस्थान प्राचीन काल से ही जैन धर्म के गढ़ रहे हैं। **वडोदरा के निकट अकोटा** में जैन कांस्य मूर्तियां बड़ी संख्या में मिली हैं, जिनका काल पांचवीं शताब्दी के अंत से सातवीं शताब्दी के अंत तक का माना जाता है।
- ☞ जैन मूर्तियों का एक नया रूप भी अस्तित्व में आया जिसमें तीर्थंकरों को एक सिंहासन पर विराजमान दिखाया गया है और उनमें ये तीर्थंकर अकेले या तीन से चौबीस तीर्थंकरों के समूह में प्रस्तुत किए गए हैं। इनके अलावा, कुछ प्रमुख तीर्थंकरों की शासन देवियों या यक्षिणियों की नारी प्रतिमाएं भी बनाई जाने लगीं।
- ☞ चक्रेश्वरी, आदिनाथ की शासन देवी और अंबिका, नेमिनाथ की शासन देवी हैं।
- ☞ बुद्ध की अनेक प्रतिमाएं खड़ी मुद्रा में पाई गई हैं, जिनमें बुद्ध को अभय मुद्रा में दर्शाया गया है। ये प्रतिमाएं गुप्त काल और उसके बाद के समय यानी पांचवीं, छठीं और सातवीं शताब्दियों में उत्तर भारत विशेषतः उत्तर प्रदेश और बिहार में ढाली गई थी। इनमें संघति यानी भिक्षु के परिधान (वेश-भूषा) से कंधे को ढका हुआ दिखाया गया है।

☞ हिमाचल प्रदेश और कश्मीर के क्षेत्रों में भी बौद्ध देवताओं तथा हिंदू देवी-देवताओं की कांस्य प्रतिमाएं बनाई जाती थीं।

☞ विष्णु की प्रतिमाएं नाना रूपों में बनाई जाने लगीं। इन क्षेत्रों में चार सिरों वाले अर्थात **चतुरानन विष्णु** की पूजा की जाती थी। यह **व्यूह सिद्धांत** पर आधारित है और ऐसे चतुरानन विष्णु को **बैकुंठ विष्णु** या **बैकुंठवासी विष्णु** कहा जाता है। विष्णु की चतुरानन मूर्ति का मध्यवर्ती या केंद्रीय मुख **वासुदेव** का होता है और बाकी दो **मुख नरसिंह और वराह** के होते हैं। **नरसिंह अवतार** या **महिषासुरमर्दिनी** की मूर्तियां हिमाचल प्रदेश में पाई जाने वाली मूर्तियों में अत्यंत प्रचलित एवं लोकप्रिय रही हैं।

☞ नालंदा के पास स्थित कुर्किहार के मूर्तिकार गुप्त काल की श्रेष्ठ शैली को पुनर्जीवित करने में सफल हो गए।

☞ इस काल की प्रतिमाओं में चतुर्भुज अवलोकितेश्वर की कांस्य प्रतिमा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह प्रतिमा **मनोहर त्रिभंग मुद्रा** में पुरुष आकृति का एक अच्छा उदाहरण है।

☞ बौद्ध देवियों की भी पूजा की जाने लगी थी, जो बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा के विकास का प्रभाव था। इसके अंतर्गत तारा देवी की मूर्तियां अत्यंत लोकप्रिय हो गईं।

☞ तमिलनाडु में चोल वंश के शासनकाल में कुछ अत्यंत सुंदर एवं उत्कृष्ट स्तर की कांस्य प्रतिमाएं बनाई गई। कांस्य प्रतिमाएं बनाने की उत्तम तकनीक और कला आज भी दक्षिण भारत, विशेष रूप से **कुंभकोणम्** में प्रचलित है।

☞ **नटराज, चालेकालीय, बारहवीं शताब्दी ईस्वी** : इस प्रतिमा में शिव को उनकी दाहिनी टांग पर संतुलित रूप से खड़े हुए और उसी टांग के पंजे से अज्ञान या विस्मृति के दैत्य 'अपस्मार' को दबाते हुए दिखाया गया है। साथ ही शिव भुजंगत्रासित की स्थिति में अपनी बाईं टांग उठाए हुए हैं, जो **'तिरोभाव'** यानी भक्त के मन से माया या भ्रम का परदा हटा देने का द्योतक है।

☞ नटराज के रूप में नृत्य करते हुए शिव की सुप्रसिद्ध प्रतिमा का विकास चोल काल में पूर्ण रूप से हो चुका था।

☞ यह पौराणिक कथा चिंदबरम् से जुड़ी है इसलिए शिव को विशेष रूप से इसी रूप में पूजा जाता है। इसके अलावा शिव को भारत में नृत्य कला का अधिष्वता देवता भी माना जाता है।

☞ आठवीं शताब्दी की पल्लव कालीन कांस्य प्रतिमाओं में शिव की मूर्ति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसमें शिव को अर्द्धपर्यक आसन में (एक टांग को झुलाते हुए) बैठे हुए दिखाया गया है। उनका दाहिना हाथ आचमन मुद्रा में है, जो यह दर्शाता है कि शिव विषपान करने वाले हैं।

☞ हिंदू धर्म में शिव को परमात्मा और संपूर्ण ब्रह्मांड का कर्ता, धर्ता और संहर्ता भी माना जाता है। यह सब प्रतीकात्मक रूप से नटराज की सुप्रसिद्ध प्रतिमा में प्रस्तुत किया गया है।

☞ तमिलनाडु के तंजावुर (तंजौर) क्षेत्र में शिव की प्रतिमाओं के नाना रूप विकसित हुए। इस संदर्भ में नौवीं शताब्दी की कल्याणसुंदर मूर्ति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसमें पाणिग्रहण यानी विवाह संस्कार को दो अलग-अलग आकृतियों के साथ प्रतिमाओं के रूप में प्रस्तुत किया गया है। शिव (वर) अपना दाहिना हाथ बढ़ाकर पार्वती (वधू) के दाहिने हाथ को स्वीकार करते हैं।

☞ अर्द्धनारीश्वर मूर्ति में शिव और पार्वती के सम्मिलित रूप को अत्यंत कौशल के साथ एक ही प्रतिमा में प्रस्तुत किया गया है।

☞ तिरुपति में, कांस्य की आदमकद प्रतिमाएं बनाई गईं, जिनमें कृष्ण देव राय को अपनी दो महारानियों तिरुमालंबा और चित्र देवी के साथ प्रस्तुत किया गया है।

☞ कंबोज साम्राज्य **कंबोडिया और अन्नाम** में फैला हुआ था। यहां पहले हिंदू संस्कृति के रंग में **पगा फूनान** का राज्य था। कंबोज **साम्राज्य पंद्रहवीं सदी तक कायम रहा।**

☞ कंबोडिया में अंकोरवाट के निकट बनवाए गए **मंदिरों को इसकी सबसे शानदार उपलब्धि** माना जा सकता है।

☞ लगभग 200 वर्षों में 302 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र मंदिरों से भर गया। इनमें से सबसे बड़ा **अंकोरवाट का मंदिर** है। इसमें तीन किलोमीटर के छतदार गलियारे हैं। ये गलियारे देवी-देवताओं और अप्सराओं की सुंदर मूर्तियों से सजे हुए हैं। अत्यंत सुरुचिपूर्ण ढंग से बनाए गए चौखानों में रामायण और महाभारत के दृश्य अंकित किए गए हैं।

☞ इस प्रकार पश्चिमी दुनिया, दक्षिण-पूर्व एशिया, चीन, मेडागास्कर और अफ्रीका के पूर्वी तट के देशों के साथ भारत का घनिष्ठ व्यापारिक तथा सांस्कृतिक संबध था।

☞ भोज विष्णु का भक्त था और उसने **''आदिवराह''** का विरूप धारण किया था। **उसके कुछ सिक्कों पर ''आदिवराह'' शब्द अंकित है।** उज्जैन के भोज परमार से उसका अंतर बताने के लिए उसे **मिहिर भोज** भी कहा जाता है। वस्तुतः भोज परमार ने मिहिर भोज के कुछ काल बाद शासन किया था।

☞ **राष्ट्र कूट राजा कृष्ण प्रथम ने एलोरा का प्रसिद्ध शिव मंदिर नवीं सदी में बनवाया था।**

☞ **अमोघवर्ष जैन था।** उसने अन्य धर्मों को भी संरक्षण दिया।

☞ राजराज के नौसैनिक पराक्रम का एक उदाहरण मालदीव की विजय थी।

- ☞ राजेंद्र प्रथम ने पांड्य और चेर देशों को पूर्णतः पराभूत करके अपने साम्राज्य में मिला लिया।
- ☞ श्रीलंका की विजय को परिणति तक पहुंचाते हुए राजेंद्र प्रथम ने वहां के राजा और रानी के मुकुट तथा राज चिह्न को अपने कब्जे में कर लिया। श्रीलंका अगले 50 वर्षों तक चोल नियंत्रण से मुक्त नहीं हो पाया।
- ☞ राजराज और राजेंद्र प्रथम ने अनेक स्थानों पर शिव और विष्णु के मंदिर बनवाकर अपनी विजयों की स्मृति को स्थायित्व प्रदान किया। इनमें से सबसे प्रसिद्ध तंजौर का राजराजेश्वर मंदिर था, जो 1010 ई. में पूरा हुआ।
- ☞ राजेंद्र प्रथम के शासनकाल का एक अत्यंत उल्लेखनीय सैनिक अभियान कलिंग के रास्ते बंगाल पर किया गया आक्रमण था। चोल सेना ने गंगा को पार करके दो स्थानीय राजाओं को पराजित किया। 1022 ई. में एक चोल सेनापति के नेतृत्व में किए गए इस अभियान में उसी मार्ग पर अनुसरण किया गया था, जिससे होकर महान विजेता समुद्रगुप्त ने इस क्षेत्र पर आक्रमण किया। इस विजय की स्मृति में राजेंद्र ने गंगइकोंडचोल (अर्थात गंगा का चोल विजेता) का विरूप धारण किया।
- ☞ राजेंद्र प्रथम ने कावेरी के मुहाने पर नई राजधानी बसाई और उसका नाम गंगइकोंडचोलपुरम (अर्थात गंगा राज्य के चोल विजेता का नगर) रखा।
- ☞ राजेंद्र प्रथम के शासनकाल में इससे भी अधिक उल्लेखनीय सैनिक पराक्रम का उदाहरण **श्रीविजय साम्राज्य पर किया गया आक्रमण** था। इस बार आक्रमण किया था चोल नौसेना ने।
- ☞ दसवीं सदी में श्रीविजय साम्राज्य फिर से शक्तिशाली हो उठा था और अब उसमें मलय प्रायद्वीप, सुमात्रा, जावा और आस-पास के द्वीप शामिल थे, चीन की ओर जाने वाले समुद्री व्यापारिक मार्ग पर श्रीविजय साम्राज्य का नियंत्रण था। इस साम्राज्य पर शैलेंद्र राजवंश का शासन था।
- ☞ शैलेंद्र शासक **बौद्ध** थे और **चोलों के साथ** उनके संबंध **मधुर** थे।
- ☞ शैलेंद्र शासक ने नागपटनम में एक बौद्ध बिहार भी बनवाया था और उसके अनुरोध पर राजेंद्र ने बिहार का खर्च चलाने के लिए एक गांव दान में दिया था।
- ☞ चोल शासकों ने चीन को कई **राजदूत मंडल** भेजे। ये आंशिक रूप से **कूटनीतिक** थे और आंशिक रूप से **व्यापारिक।**
- ☞ चोलकालीन अभिलेखों में दो सभाओं का उल्लेख देखने को मिलता है। इनमें से एक है **उर** और दूसरी **सभा या महासभा।**
- ☞ उर गांव की आम सभा थी लेकिन महासभा **अग्रहार कहे जाने वाले ब्राह्मण गांवों के वयस्क सदस्यों की सभा** थी।
- ☞ गांव के मामलों को **एक कार्यकारिणी समिति** संभालती थी। इस समिति के सदस्य संपत्तिशाली शिक्षित लोग होते थे। सदस्यों का चुनाव पर्चियां निकाल कर या बारी के अनुसार किया जाता था। **ये सदस्य हर तीन वर्ष बाद हट जाते थे।**
- ☞ इस काल की एक उल्लेखनीय विशेषता, क्षेत्रीय भाषाओं का विकास था। छठीं से लेकर नवीं सदी तक तमिल देश में अनेक लोकप्रिय संतों का प्रादुर्भाव हुआ। अलवार और नयनार कहे जाने वाले ये संत **विष्णु और शिव के भक्त** होते थे। उन्होंने तमिल तथा संबंधित क्षेत्र की अन्योन्य भाषाओं में गीतों और भजनों की रचना की। इन संतों की रचनाओं को बारहवीं सदी के आरंभ में **तिरुमुरइ** नाम से **ग्यारह जिल्दों** में संकलित किया गया। इन रचनाओं को **पवित्र** माना जाता है और **पांचवें वेद का दर्जा** दिया जाता है।
- ☞ कंबन का काल, जो विद्वानों की राय में ग्यारहवीं सदी का उत्तरार्द्ध और बारहवीं सदी का प्रारंभिक चरण था, **तमिल साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है। कंबन की रामायण** को **तमिल साहित्य की उच्चतम कोटि की रचना** माना जाता है।
- ☞ **पंपा, पोन्ना** और **रन्ना कन्नड़ काव्य के रत्न** माने जाते हैं। यद्यपि ये विद्वान जैन धर्म से प्रभावित थे, तथापि उन्होंने रामायण और महाभारत से लिए गए विषयों पर भी खूब लिखा।
- ☞ बुद्ध ने एक व्यावहारिक दर्शन की शिक्षा दी थी। उसमें पुरोहितों के लिए न्यूनतम स्थान था और देवत्व को लेकर विशेष ऊहापोह की गुंजाइश नही रखी गई थी। लेकिन ईस्वी सन् के आरंभिक सदियों में महायान पंथ के उदय के साथ बुद्ध की पूजा एक देवता के रूप में की जाने लगी थी। अब यह पूजा अधिक आडंबर युक्त हो गई। इस तरह के विश्वास का विकास हुआ कि मात्र **मंत्रों के उच्चारण** और **विविध प्रकार की रहस्यमय मुद्राएं बनाकर** साधक अपना मनोरथ पूरा कर सकता है।
- ☞ गोरखनाथ या उसके अनुयायी वामपंथी कहलाए। इस समय पूरे उत्तर भारत में उनकी लोकप्रियता थी।
- ☞ इन योगियों में से कई निम्न जातियों के थे। उन्होंने जाति-प्रथा की निंदा की और ब्राह्मणों के विशेषाधिकारी के दावे को चुनौती दी। उन्होंने जिस पंथ का प्रचार किया वह तंत्र कहलाता था। तंत्र संप्रदाय के द्वारा सभी जातियों के लोग के लिए खुले हुए थे।
- ☞ **लिंगायत शिव के उपासक हैं,** उन्होंने जाति प्रथा का प्रबल विरोध किया और **उपवास, भोज, तीर्थयात्रा** तथा **यज्ञ** को

नकार दिया। सामाजिक क्षेत्र में उन्होंने **बाल-विवाह का विरोध** किया और **विधवाओं के विवाह का समर्थन** किया।

☞ **शंकर का जन्म केरल में शायद नवीं सदी में हुआ था।** उसको लेकर अनेक कथा-कहानियां प्रचलित हुईं।

☞ शंकर के दर्शन को अद्वैत कहा जाता है। शंकर के अनुसार, ईश्वर और उसकी सृष्टि एक ही हैं, जो भेद दिखाई देता है, यह वास्तविक नहीं बल्कि अज्ञानजनित माया है। मोक्ष का मार्ग ईश्वर की भक्ति है, जिसका आधार यह ज्ञान है कि ईश्वर और उसकी सृष्टि एक ही है। इस दर्शन को **वेदांत** कहते हैं।

☞ **शंकर ने वेदों को सच्चे ज्ञान के स्रोत के रूप में फिर से प्रतिष्ठित किया।**

☞ ग्यारहवीं सदी में **रामानुज** नामक एक अन्य प्रसिद्ध विद्वान ने **वेदों के साथ भक्ति परंपरा का सामंजस्य** स्थापित करने का प्रयत्न किया। उसका कहना था कि मोक्ष प्राप्त करने के लिए ईश्वर के ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण **भगवत्कृपा** है। उसने यह भी कहा कि **भक्ति का मार्ग सभी जाति के लोगों के लिए खुला है।**

☞ रामानुज द्वारा प्रवर्तित परंपरा का अनुसरण दक्षिण भारत में मध्वाचार्य और उत्तर भारत में **रामानंद**, **वल्लभाचार्य** आदि कई विद्वान चिंतकों ने किए।

☞ ईसा की सातवीं तथा आठवीं शताब्दी में इस्लाम धर्म स्पेन और भारत की ओर फैला। भारत में इस्लाम विशेष रूप से मुस्लिम सौदागरों, व्यापारियों, धर्मगुरुओं और विजेताओं के साथ आया, जो यहां लगभग 600 वर्षों तक समय-समय पर आते रहे।

☞ मुस्लिम लोगों ने ईसा की आठवीं शताब्दी से ही सिंधु, गुजरात आदि प्रदेशों में इमारतें, निर्माण का काम शुरू कर दिया था, मगर बड़े पैमाने पर भवन निर्माण का कार्य ईसा की तेरहवीं शताब्दी के प्रारंभ में तुर्कों का शासन स्थापित हो जाने के बाद ही शुरू हुआ, जब उन्होंने उत्तर भारत को जीतकर दिल्ली सल्तनत की स्थापना की।

☞ मुस्लिम शासकों ने स्थानीय सामग्रियों, संस्कृतियों और परंपराओं को अपने साथ लाई गई तकनीकों के साथ अपना लिया।

☞ निर्माण की जो तकनीकें अस्तित्व में आई, उन्हें सामूहिक रूप से इंडो-इस्लामिक, इंडो-सारसेनिक (इंडो अरेबिक) वास्तुकला कहा जाता है।

☞ मुस्लिमों को किसी भी सजीव रूप की, किसी भी सतह पर प्रतिकृति बनाना मना है इसलिए उन्होंने प्लास्टर या पत्थर पर 'अरबस्क' यानी बेल-बूटे का काम, ज्यामितीय प्रतिरूप और सुलेखन की कलाओं का विकास किया।

☞ इंडो-इस्लामिक वास्तुकला को परंपरा की दृष्टि से कई श्रेणियों में बांटा जाता है जिनके नाम हैं - शाही शैली (दिल्ली सल्तनत), प्रांतीय शैली (मांडु, गुजरात, बंगाल और जौनपुर), मुगल शैली (दिल्ली, आगरा और लाहौर) और दक्कनी शैली (बीजापुर, गोलकोंडा)।

☞ स्तंभ या गुम्बद का एक अन्य रूप **मीनार** थी, जो भारतीय उपमहाद्वीप में सर्वत्र पाई जाती है। मध्य काल की सबसे प्रसिद्ध और आकर्षक मीनारें थीं - **दिल्ली में कुतुबमीनार** और **दौलताबाद के किले में चांद मीनार।** इन मीनारों का दैनिक उपयोग नमाज या इबादत के लिए अजान लगाना था।

☞ कुतुबमीनार का संबंध दिल्ली के संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी से भी जोड़ा जाता है। तेरहवीं सदी में बनाई गई यह मीनार 234 फीट ऊंची है। इसकी चार मंजिलें हैं, जो ऊपर की ओर क्रमशः पतली या संकरी होती चाली जाती हैं। यह बहुभुजी और वृत्ताकार रूपों का मिश्रण है।

नोट-चौथी मंजिल बिजली गिरने से नष्ट होने के बाद फिरोज तुगलक ने इसे 5 मंजिला बना दिया है। भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के अनुसार, कुतुबमीनार की ऊंचाई 72.5 मीटर लगभग है।

☞ इल्तुतमिश को तुर्कों की भारत विजय को स्थायित्व प्रदान करने का श्रेय दिया जाता है।

☞ काफी सोच-विचार के बाद इल्तुतमिश ने अपनी बेटी रजिया को दिल्ली की गद्दी पर बैठने के लिए नामजद करने का फैसला किया।

☞ बेटों के मुकाबले बेटी को तरजीह देकर उसे उत्तराधिकारी नामजद करना एक नया कदम था।

☞ रजिया के शासनकाल में सत्ता के लिए राजतंत्र और तुर्क सरदारों के बीच संघर्ष आरंभ हुआ, जिन्हें कभी-कभी **'चहलगामी'** या **'चालीसा'** कहा जाता था।

☞ रजिया ने जनाना **पोशाक को त्याग करके बिना बुर्के-पर्दे के दरबार लगाना** शुरू कर दिया। इतना ही नहीं ''**वह शिकार पर भी जाती थीं**'' और युद्ध में **सेना का नेतृत्व** करती थीं।

☞ मुहम्मद-बिन-तुगलक अपने युग का सबसे उल्लेखनीय शासक था। उसने धर्म और दर्शन का गहरा अध्ययन किया था और वह बहुत ही विवेचनात्मक बुद्धि और खुले दिमाग वाला व्यक्ति था।

☞ उसका संलाप न केवल मुसलमान रहस्यवादियों से चलता था, बल्कि हिंदू योगियों तथा जैन मुनियों से भी चलता था।

☞ सल्तनत काल में कई हिंदू मंदिरों को मस्जिदों में बदल दिया गया। इसका सबसे उल्लेखनीय उदाहरण कुतुबमीनार के निकट

कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद है, जो पहले विष्णु मंदिर था। इसे मस्जिद का रूप देने के लिए गर्भगृह को, जिसमें देवी-देवताओं की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित थीं, गिरा दिया गया और उसके मेहराबों पर कुरान की आयतें उत्कीर्ण कर दी गईं।

☞ मंदिरों तथा हिंदुओं जैनों आदि के पूजा-स्थलों के प्रति नीति इस्लामी कानून (शरीअत) पर आधारित थी, जो **''इस्लाम के बरखिलाफ''** नए पूजा स्थलों के निर्माण का निषेध करता था।

☞ गुजरात में **नरसी मेहता**, राजस्थान में मीरा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश में **सूरदास** तथा बंगाल और ओडिशा में चैतन्य के काव्यों के गीतात्मक माधुर्य एवं प्रेमातिरेक ने सारी सीमाओं को तोड़ डाला। धर्म और जाति की सीमाओं को भी। ये संत अपने सम्प्रदाय में सभी जातियों और धर्मों के लोगों का स्वागत करने को तैयार थे।

☞ **मलिक मुहम्मद जायसी** ने अपनी कृति की रचना **हिंदी की अवधी बोली** में की।

☞ बारहवीं और सोलहवीं सदियों के बीच धर्मशास्त्रों (हिंदू कानून) पर बड़ी संख्या में टीकाएं लिखी गईं और उसके सार-संकलन तैयार किए गए। **विज्ञानेश्वर** की महान कृति **मिताक्षरा** को, जो हिंदू कानून की दो प्रमुख धाराओं में से एक है, बारहवीं सदी के पहले की रचना नहीं माना जा सकता।

☞ जैनों ने भी संस्कृत साहित्य के विकास में योगदान किया। इनमें से सबसे प्रसिद्ध हेमचंद्र सूरि नाम का विद्वान था।

☞ भारतीय विद्वानों की सहायता से इस्लामी कानून के सार-संकलन फारसी में तैयार करवाए गए। इनमें से सबसे प्रसिद्ध संकलन **फिरोज तुगलक के शासनकाल में** तैयार किए गए। लेकिन अरबी सार-संकलन भी तैयार किए जाते रहे। इनमें सबसे प्रसिद्ध **फतवा-ए-आलमगीरी** अर्थात औरंगजेब के शासनकाल में विधिवेत्ताओं के एक समूह द्वारा तैयार किया गया **कानूनों का सार-संकलन** है।

☞ तुर्कों ने आरंभ से ही इस देश में साहित्य तथा प्रशासन की भाषा के रूप में **फारसी** को अपनाया।

☞ लाहौर फारसी भाषा के प्रयोग-प्रसार के प्रथम केंद्र के रूप में उभरा।

☞ इस दौर का सबसे उल्लेखनीय फारसी **लेखक अमीर खुसरो** था। 1252 ई. में पटियाली (पश्चिमी उत्तर प्रदेश का बदायूं जिला) में जन्में अमीर खुसरो को **भारतीय** होने पर गर्व था।

☞ कश्मीर के सुल्तान **जैन-उल-आबिदीन** ने प्रसिद्ध ऐतिहासिक कृति **राजतरंगिणी** और **महाभारत** का अनुवाद संस्कृत से फारसी में करवाया। उसके निर्देश पर आयुर्विज्ञान तथा संगीत पर भी संस्कृत कृतियों का फारसी में अनुवाद किया गया।

☞ इस काल में कई क्षेत्रीय भाषाओं में उच्च कोटि के साहित्य की रचनाएं की गईं। इनमें से कई भाषाओं, जैसे हिंदी, बांगला और मराठी के मूल का उद्‌भव आठवीं सदी में या उसके आस-पास किया जाता है।

☞ दक्षिण भारत में **तेलुगू** में साहित्य का विकास विजयनगर राज्य के संरक्षण में हुआ।

☞ मराठी बहमनी सल्तनत की एक प्रशासनिक भाषा थी और बाद में **बीजापुर दरबार** की भी भाषा यही रही।

☞ बंगाल के **नुसरत शाह** महाभारत और रामायण का बांगला भाषा में अनुवाद करवाया। उसी के संरक्षण में **मालाधर बसु** ने **भागवत** का भी **बांगला** में अनुवाद किया।

☞ **तुर्क** भारत आए तो अपने साथ **संगीत की समृद्ध अरब विरासत** लेकर आए थे। इस विरासत को ईरान और मध्य एशिया में और भी समृद्ध किया गया। तुर्क लोग अपने साथ **रबाब और सारंगी** जैसे कई वाद्य यंत्र तथा नई संगीत पद्धतियां और नियम भी लाएं।

☞ अमीर खुसरो को नायक का खिताब दिया गया था।

☞ अमीर खुसरो ने अरबी-फारसी मूल के कई राग जैसे-एमन, घोर भारतीय संगीत में दाखिल किए। उसे सितार का इजाद करने का श्रेय दिया जाता है।

☞ सूफी संत **पीर बोधन** को उस काल का **दूसरा महान संगीतज्ञ** माना जाता है।

☞ **ग्वालियर** में भी संगीत को भरपूर प्रश्रय मिला। ग्वालियर का राजा मानसिंह बहुत बड़ा संगीत प्रेमी था। मान कौतूहल, जिसमें मुसलमानों द्वारा भारतीय संगीत में दाखिल की गई सभी पद्धतियों का वर्णन है, उसी के तत्वावधान में तैयार किया गया।

☞ जौनपुर को जीतने के बाद **सिकंदर लोदी** ने संगीत को संरक्षण देने की परंपरा का **भरपूर पालन किया।** बाद में महान मुगल बादशाहों ने भी इस परंपरा को अपनाया।

☞ 1526 ई. में गद्दी पर बैठने के डेढ़ वर्ष बाद हुमायूं दिल्ली में एक नए नगर के निर्माण में व्यस्त रहा, जिसका नाम **दीनपनाह** रखा गया।

☞ शेरशाह ने विद्वानों को भी संरक्षण दिया। हिंदी की कुछ उत्कृष्ट रचनाएं उसी के शासनकाल में पूरी की गई। उनमें से एक मलिक मुहम्मद जायसी का पद्मावत काव्य-ग्रंथ भी था।

☞ 1575 ई. में अकबर ने अपनी **नई राजधानी फतेहपुर सीकरी में** एक बड़ा कक्ष बनवाया, जिसे इबादतखाना (प्रार्थना कक्ष) कहा जाता था। अकबर इबादतखाने में वह धर्मतत्व विज्ञों, रहस्यवादियों और अपने दरबार के जाने-माने विद्वानों तथा बौद्धिक जनों की गोष्ठियां आयोजित करता था।

☞ अकबर ने ''इबादतखाने के द्वार सभी के लिए खोल दिए- न केवल ईसाइयों, जरथुस्त्रीयों, हिंदुओं और जैनों के लिए बल्कि नास्तिकों तक के लिए भी।'' इससे चर्चाओं और बहसों का दायरा बड़ा हो गया।

☞ मुल्लाओं के मुकाबले अपनी स्थिति को और भी मजबूत करने के लिए अकबर ने एक 'महजर' की घोषणा जारी की। इसमें दावा किया गया था कि जिन लोगों को कुरान की व्याख्या करने का हक है उनके बीच, अर्थात मुजतहिदों के बीच यदि मतभेद हो, तो एक ''सर्वाधिक न्यायप्रिय और बुद्धिमान राजा की हैसियत से'' और ऐसे व्यक्ति के रूप में, जिसका स्थान खुदा की निगाह में मुजतहिदों से ऊंचा है, अकबर को अधिकार है कि वह उनकी व्याख्याओं में से ऐसी व्याख्या को चुन ले ''जिससे देश का लाभ होगा और जो सुव्यवस्था के हक में होगी।''

☞ प्रमुख उलेमाओं के हस्ताक्षरों से जारी की गई इस घोषणा को ''समरथ को अमोघत्व का आदेश'' (डॉक्ट्रिन ऑफ इनफैलिबिटी) कहा गया जो सही नहीं है। अकबर ने तो उस स्थिति में सिर्फ किसी एक व्याख्या को चुनने के अधिकार का दावा किया था जब कुरान की व्याख्या करने के हकदार लोगों में मतभेद हो।

☞ परंतु अकबर को देश के विभिन्न धर्मों के मानने वालों के बीच एक मिलन-बिंदु की तलाश की कोशिश में वैसी कामयाबी नहीं मिली। इबादतखाने की गोष्ठियों और बहस-मुबाहिसों से विभिन्न धर्मों के बीच सद्भाव पैदा नहीं हो पाया। उल्टे उनसे और भी कट्टरता पैदा हुई, क्योंकि हर धर्म के प्रतिनिधि दूसरे धर्मों की निंदा करते थे और अपने धर्म को सर्वश्रेष्ठ बताते थे। अतः 1582 ई. में अकबर ने इबादतखाने में बहसों का सिलसिला बंद कर दिया।

☞ अकबर ने हिंदू धर्म के सिद्धांतों की व्याख्या करने के लिए **पुरुषोत्तम और देवी** और जरथुस्त्री धर्म के वसूलों का खुलासा करने के लिए **महाराजा राणा** को निमंत्रित किया।

☞ अकबर कुछ पुर्तगाली पादरियों से मिला और ईसाई धर्म के सिद्धांतों की बेहतर समझ हासिल करने के लिए इस अनुरोध के साथ एक दूतमंडल गोवा भेजा कि दो विद्वान मिशनरियों को उसके दरबार में भेज दिया जाए। पुर्तगालियों ने अक्वावीवा और मौनसेरट नामक दो मिशनरियों को अकबर के दरबार में भेजा जहां वे लगभग तीन वर्ष रहे। ये मिशनरी अकबर के **धार्मिक ऊहापोह** के बारे में अच्छा विवरण छोड़ गए हैं।

☞ अकबर जैनों के संपर्क में भी आया और उसके अनुरोध पर काठियावाड़ के प्रमुख **जैन मुनि हीरा विजय सूरि** ने भी उसके दरबार में एक-दो वर्ष बिताए।

☞ **बदायूंनी** दावा करता है कि इसके परिणामस्वरूप अकबर **इस्लाम से विमुख हो गया** और उसने एक नए धर्म की स्थापना की जो **हिंदू धर्म, ईसाई धर्म, जरथुस्त्री धर्म आदि** का मिश्रण था। लेकिन आधुनिक इतिहासकार इस दावे को स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं।

☞ इसके लिए अबुल फजल और बदायूंनी ने तौहीद-ए-इलाही' शब्द का प्रयोग किया है जिसका मतलब है - **एकेश्वरवाद।** इसके साथ दीन अर्थात धर्म शब्द 80 वर्ष बाद जोड़ा गया। तौहीदे इलाही में दीक्षा का दिन 'रविवार' होता था।

☞ अकबर ने विभिन्न धर्मों के बीच सुलहकुल या शांति तथा मेल-जोल पर और तरीकों से भी जोर देने की कोशिश की।

☞ अकबर ने कई सामाजिक तथा शैक्षिक सुधार भी किए। उसमें सती-प्रथा समाप्त कर दी। हां यदि कोई स्त्री अपनी इच्छा से सती होने के आग्रह पर डट जाए, तो उसे वैसा करने की छूट होती थी।

☞ **विधवा-विवाह को भी कानूनी समर्थन दिया गया।** यदि पहली पत्नी बांझ न हो तो एकाधिक स्त्रियों से विवाह करना अकबर को नामंजूर था।

☞ विवाह की उम्र को बढ़ाकर लड़कियों के मामले में 14 वर्ष और लड़के के लिए 16 वर्ष कर दी गई।

☞ अकबर ने शिक्षा के पाठ्यक्रम को भी संशोधित किया। उसने नैतिक शिक्षा और गणित एवं कृषि, ज्यामिति, खगोल-विज्ञान, शासन के नियम, तर्कशास्त्र, इतिहास आदि जैसे धर्मोत्तर विषयों की शिक्षा पर जोर दिया।

☞ अहमदनगर के शासक बुरहान की बहन चांदबीबी बीजापुर के पूर्व शासक की विधवा थी और उधर बीजापुर का वह पूर्व शासक इब्राहिम का चाचा था। **चांदबीबी बहुत बुद्धिमती और साहसी स्त्री थी** और जब इब्राहिम आदिलशाह नाबालिग था, उस समय लगभग 10 वर्षों तक बीजापुर पर वास्तव में उसी ने राज किया था। वह अहमदनगर संवदेना प्रकट करने गई। लेकिन **अपने भतीजे की सहायता करने के लिए वह वहीं रुक गई।**

☞ **बीजापुर के शासक अली आदिलशाह (मृत्य 1580 ई.) को हिंदू और मुसलमान संतों से समागम में बहुत आनंद आता था**

और लोग उसे **सूफी** कहते थे। अकबर से भी पहले उसने अपने दरबार में **कैथोलिक मिशनरियों** को बुलाया था।

- ☞ उसके पास एक **शानदार पुस्तकालय** था, जिसका अध्यक्ष उसने प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान **वामन पंडित** को बनाया।
- ☞ अली आदिलशाह का उत्तराधिकारी, द्वितीय इब्राहिम आदिलशाह मात्र 9 वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठा था। उसे गरीबों की भलाई का बहुत ख्याल रहता था और उसे ''अबला बाबा या गरीबों का दोस्त '' कहा जाता था।।
- ☞ **संगीत में उसकी गहरी रुचि थी** और उसने **''किताब-ए-नौरस''** नाम की एक पुस्तक की भी रचना की, जिसमें गीतों को विभिन्न रागों में बांधकर प्रस्तुत किया गया था।
- ☞ उसने **नौरसपुर** नाम से एक नई राजधानी बसाई जहां रहने के लिए **बहुत-से संगीतज्ञों** को बुलाया गया।
- ☞ व्यापक दृष्टिकोण के कारण वह **''जगत गुरु''** कहलाता था। उसने सबको संरक्षण दिया जिनमें **हिंदू संत और मंदिर** भी शामिल थे। उसने **विठोवा की उपासना** के केंद्र **पंढरपुर** को भी अनुदान दिए बाद में **पंढरपुर महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन का एक प्रसिद्ध केंद्र बन गया।**
- ☞ **राजकवि नुसरती** ने, जिसका जीवनकाल **सत्रहवीं सदी के मध्य में पड़ता था,** कनकनगर के राजकुमार मनोहर और **मधुमालती की प्रेमकथा** लिखी। अठारहवीं सदी में ऊर्दू दक्कन से उत्तर भारत में पहुंची।
- ☞ जहां तक **स्थापत्य** का संबंध है, **मुहम्मद कुली कुतुबशाह** ने कई इमारतें बनवाई जिनमें सबसे प्रसिद्ध **चारमीनार है**। 1591-92 ई. में पूरी की गई यह इमारत **मुहम्मद कुली कुतुबशाह** द्वारा बसाए गए **हैदराबाद नगर के बीच** में स्थित थी।
- ☞ इब्राहिम रौजा, इब्राहिम आदिलशाह का मकबरा है।
- ☞ **बाबर बगीचों का बहुत शौकीन था।** उसने आगरा तथा लाहौर के आस-पास कुछ बगीचे लगवाए।
- ☞ कुछ मुगल उद्यान, जैसे **कश्मीर का निशातबाग**, **लाहौर का शालीमार** और **पंजाब की तलहटी का पिंजोर बाग** आज तक कायम हैं।
- ☞ शेरशाह ने स्थापत्य को नया उत्तेजन दिया। **सासाराम (बिहार) का उसका प्रसिद्ध मकबरा** और **दिल्ली के पुराने किले में उसकी मस्जिद** स्थापत्य के उत्कृष्ट नमूने माने जाते हैं। इन्हें यदि प्राक्-मुगल स्थापत्य की चरम परिणति कहा जाए, तो यह नए स्थापत्य का प्रस्थान बिंदु होगी।
- ☞ अकबर पहला मुगल शहंशाह था, जिसके पास बड़े पैमाने पर निर्माण कार्य कराने के लिए समय भी था और साधन भी। उसने कई किले बनवाए, जिनमें से सबसे विख्यात आगरा का किला है। लाल बलुई पत्थर से बने इस किले में कई शानदार दरवाजे थे। किलों के निर्माण का क्रम शाहजहां द्वारा दिल्ली में बनवाए लाल किले के रूप में अपने शिखर पर पहुंच गया।
- ☞ अकबर ने आगरा से 36 किलोमीटर दूर फतेहपुर सीकरी में 1572 ई. में एक राजमहल-सह-किले का निर्माण आरंभ किया। यह 8 वर्षों में बनकर तैयार हुआ। एक विशाल कृत्रिम झील से युक्त पहाड़ी पर बने इस किले में गुजरात और बंगाल शैलियों की कई इमारतें शामिल थी। इसमें गहरी गुफाओं, छज्जों और सुंदर छतरियों का इस्तेमाल किया गया। हवा लेने के लिए बनाए गए पंचमहल में विभिन्न मंदिरों में प्रयुक्त सभी तरह के स्तंभों का इस्तेमाल चौरस छतों को सहारा देने के लिए किया गया है। शायद उसकी राजपूत पत्नी या पत्नियों के लिए बनाए गए ताजमहल में स्थापत्य की गुजरात की शैली का उपयोग सबसे ज्यादा किया गया। अकबर ने आगरा और फतेहपुर सीकरी-दोनों स्थानों में किए गए निर्माणों में गहरी व्यक्तिगत रुचि ली। दीवारों और छतों में सजावट के लिए इस्तेमाल की गई चमकीली नीली टाइल्सों से पारसी या मध्य एशियाई प्रभाव देखा जा सकता है। लेकिन सबसे शानदार इमारत थी, वहां की मस्जिद और उसका विशाल प्रवेश द्वारा जिसे **बुलंद दरवाजा** कहते हैं। यह मस्जिद अकबर की **गुजरात विजय** के उपलक्ष्य में बनवाई गई थी। यह दरवाजा जिस शैली का बना हुआ, उसे **अर्द्धगुंबदीय दरवाजा** कहते हैं। कटा हुआ भाग दरवाजे की विशाल बाहरी आड़ का काम करता था, जबकि पिछली दीवार में जहां गुम्बद और फर्श आपस में मिलते हैं, छोटे-छोटे दरवाजे बनाए जा सकते थे। **ईरान से उधार ली गई यह पद्धति** बाद में मुगल इमारतों की खास विशेषता बन गई।
- ☞ जहांगीर के शासनकाल में अंतिम वर्षों से केवल संगमरमर की इमारतें बनवाने और दीवारों को अर्द्ध मूल्यवान पत्थरों से बनी फूल-पत्तियों की आकृतियों से सजाने का चलन आरंभ हुआ। सजावट की इस पद्धति को ''प्येत्रा द्युरा'' कहते हैं।
- ☞ शाहजहां के शासनकाल में यह पद्धति और भी लोकप्रिय हो गई और उसने ताजमहल में इसका भरपूर उपयोग किया। ताजमहल में मुगलों द्वारा विकसित सभी स्थापत्य शैलियों का सुंदर हुआ सामंजस्य है।
- ☞ अकबर के शासनकाल के आरंभ में दिल्ली में बनवाए गए हुमायूं के मकबरे को, जिसमें **संगमरमर का एक विशाल गुम्बद** भी है, **ताजमहल की विशेषताओं का पूर्वसूचक** माना जा सकता

है। दोहरा गुम्बद इसकी विशेषताओं का पूर्वसूचक माना जा सकता है। **दोहरा गुम्बद** इस इमारत की **दूसरी विशेषता** थी।

☞ शाहजहां के शासनकाल में मस्जिद निर्माण भी अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गया था। इसके दो उत्कृष्ट नमूनों में से ही तो एक आगरा के किले की मोती मस्जिद, जो ताज की ही तरह संगमरमर की बनी हुई है और दूसरी है लाल बलुई पत्थर से बनी दिल्ली की जामा मस्जिद।

☞ आरंभ से ही हिंदू और इस्लाम-दोनों धर्मों के लोग इस प्रवृत्ति में जुट गए। उदाहरण के लिए **जसवंत और दसावन अकबर के दरबार के दो प्रसिद्ध चित्रकार थे।**

☞ **जहांगीर के अधीन मुगल चित्रकारी अपनी पराकाष्ठा पर पहुंची।** जहांगीर की दृष्टि बहुत पारखी थी। मुगल चित्रकारी के केंद्र में यह चलन था कि एक ही चित्र में लोगों की आकृतियों के विभिन्न अवयवों का चित्रण अलग-अलग चित्रकार करते थे। जहांगीर का दावा था कि वह किसी भी चित्र में अलग-अलग चित्रकारों के योगदान की पहचान कर सकता है।

☞ अकबर के अधीन पुर्तगाली पादरियों ने दरबार में यूरोपीय चित्रकारी का समावेश किया। उसके प्रभाव के अधीन चित्र में दूर दिखने वाली आकृतियों को छोटा दर्शाने के सिद्धांत को अपनाया गया। इससे आकृतियां अपने सही परिप्रेक्ष्य में सामने आती थीं।

☞ राजस्थानी शैली की चित्रकारी में पश्चिमी भारतीय या जैन शैली की पूर्ववर्ती परंपराओं का मिश्रण चित्रकारी की मुगल शैलियों के साथ किया गया। इस प्रकार इस शैली की चित्रकारी में शिकार के दृश्यों के अलावा, राधा-कृष्ण की प्रेमलीला जैसे मिथिकीय विषयों, बारहमासा और रागों के चित्रण को भी स्थान दिया गया। पहाड़ी शैली ने भी इन परंपराओं को जारी रखा।

☞ **अकबर ग्वालियर के प्रसिद्ध गायक तानसेन का संरक्षक था।** तानसेन को कई नए रागों की रचना का श्रेय दिया जाता है।

☞ **औरंगजेब एक कुशल वीणावादक था।** औरंगजेब के हरम की रानियों और उसके उमरा संगीत के सभी रूपों को प्रश्रय देते रहे। यही कारण है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत पर फारसी में सबसे अधिक पुस्तकों की रचना औरंगजेब के शासनकाल में हुई थी।

☞ **पांचवें गुरु अर्जुन दास** ने सिक्खों के धर्म ग्रंथ आदि-ग्रंथ के ग्रंथ साहिब का संकलन पूरा किया।

☞ दारा, स्वभाव से विद्वान और सूफी था, जिसे धर्मतत्वों के ज्ञाताओं के साथ चर्चा में बहुत आनंद मिलता था।

☞ **काशी के पंडितों की मदद से उसने गीता का फारसी में अनुवाद किया** लेकिन उनका सबसे महत्वपूर्ण कृतित्व **वेदों का एक संगलन था,** जिसमें वेदों को ''दिव्य ग्रंथ'' और ''पाक कुरान से मेल खाता हुआ'' बताया।

☞ गुजरात में जन्में लेकिन अपना जीवन मुख्य रूप से शायद राजस्थान में व्यतीत करने वाले एक और संत दादू के निपख (निष्पक्ष) अर्थात ''असांप्रदायिक पंथ'' की शिक्षा दी।

☞ तुकाराम महाराष्ट्र के **पंढरपुर** नामक स्थान में जो कि उन दिनों महाराष्ट्र धर्म का केंद्र बन गया था और जहां विष्णु के विठोवा रूप की उपासना बहुत लोकप्रिय हो गई थी। भक्ति के अदम्य प्रतिपादक के रूप में उभरता तुकराम कहता है कि वह शूद्र जाति में पैदा हुआ लेकिन वह अपने हाथों से ईश्वर की पूजा करता है।

☞ महाराष्ट्र के रामानंद जो कि बाद में **शिवाजी द्वारा अपने आध्यत्मिक गुरु माने गए,** ने प्रवृत्ति,दर्शन का प्रतिपादन किया लेकिन ब्राह्मणों के विशेषाधिकारों पर उसका भी उतना ही तीव्र आग्रह था।

☞ 1674 ई. में शिवाजी ने राजगढ़ में विधिवत राजमुकुट धारण किया।

☞ राजतिलक का संस्कार संपादित करने वाले **पुरोहित गंगा भट्ट** ने विधिवत यह घोषणा भी की कि शिवाजी **उच्च वर्गीय क्षत्रिय** हैं।

☞ यद्यपि शिवाजी ने हैन देव 'धर्मोद्धारक' के विरुद्ध किया था, तथापि उसने उस क्षेत्र की हिंदू आबादी को भी जी भर लूटा।

☞ कृष्णदेव ने **तुलुवा नामक एक नए राजवंश** की स्थापना की। **कृष्णदेव राय (1509 ई.- 30 ई.)** इस राजवंश का सबसे महान राजा हुआ। कुछ इतिहासकार उसे विजय नगर के सभी राजाओं में सबसे महान मानते हैं।

☞ कृष्णदेव एक **महान निर्माता** भी था। उसने **विजयनगर** के निकट **एक नया शहर** बसाया और **एक विशाल तालाब** भी खुदवाया, जिसका उपयोग सिंचाई के लिए भी किया जाता था।

☞ गंगा की घाटी में अपनी आजादी की घोषणा सबसे पहले करने वालों में एक था **मलिक सरवर,** जो फिरोजशाह तुगलक के समय का एक प्रमुख अमीर था।

☞ मलिक सरवर कुछ समय तक वजीर रहा था और उसके बाद उसे **मलिक-उस-शर्क (पूर्व के स्वामी)** के खिताब के साथ सल्तनत के पूर्वी क्षेत्र का शासक बना दिया गया था। उसके इस खिताब के कारण ही उसके उत्तराधिकारी शर्की कहलाए।

- ☞ शर्की सुल्तानों ने **जौनपुर को (पूर्वी उत्तर प्रदेश में) अपनी राजधानी बनाया** और उसे शानदार इमारतों, मस्जिदों और मकबरों से सजाया।
- ☞ **शर्की सुल्तानों ने विद्वता और संस्कृति को भरपूर संरक्षण दिया।** जौनपुर में कवियों और साहित्यकारों, संतों और विद्वानों का जमघट-सा लगा रहता था। कालांतर में जौनपुर को **''पूरब का शिराज''** कहा जाने लगा।
- ☞ प्रसिद्ध हिंदी महाकाव्य **'पद्मावत'** का रचयिता **मलिक मुहम्मद जायसी** जौनपुर का ही निवासी था।
- ☞ दसवीं सदी में **मुताजिला या बुद्धिवादी दर्शन** का बोलबाला खत्म हो गया तथा कुरान तथा हदीस (मुहम्मद और उसकी साथियें से संबंधित परंपराओं) पर आधारित **रूढ़िवादी विचारधाराओं और सूफी रहस्यवादी पंथ** का उदय हुआ। बुद्धिवादियों पर शक्तिवाद और नास्तिकता फैलाने का आरोप लगाया गया। खासतौर से उनका एकतावादी दर्शन जिसमें अल्ला और उसके द्वारा बनाई गई दुनिया को मूलभूत रूप से एक माना जाता था, इस आधार पर इस्लाम में विरोधी करार दिया गया कि यह सृष्टा और सृष्टि के बीच के अंतर को मिटा देता है।
- ☞ कुछ सूफियों ने जैसे महिला रहस्यवादिनी **राबिया** (आठवीं सदी) और रहस्यवादी **मंसूर बिन हल्लाज** (दसवीं सदी) ने ईश्वर और जीवात्मा को एक-दूसरे से जोड़ने वाले तत्व के रूप में **प्रेम** पर बहुत जोर दिया। लेकिन उनके इस सर्वेश्वरवादी दृष्टिकोण ने उन्हें रूढ़िवादी तत्वों के मुकाबले में खड़ा कर दिया और इन तत्वों ने **मंसूर को मौत की सजा** दिलाने में कामयाबी हासिल की।
- ☞ इस समय के आस-पास सूफी 12 पंथों या सिलसिलों में संगठित थे। इस सिलसिले का नेतृत्व आमतौर पर एक प्रसिद्ध सूफी संत करता था, जो **पीर** कहलाता था और अपने शिष्यों या मुरीदों के साथ **खानकाह अर्थात आरंभ में** रहता था। **पीर और मुरादों का संबंध सूफी धर्मव्यवस्था का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग था।**
- ☞ सूफियों के संत- संगठन और उनके कुछ आचारों जैसे तप, उपवास, प्राणायाम आदि के भूत में कुछ विद्वान बौद्ध और हिंदू यौगिक प्रभाव की प्रेरणा मानते हैं। इस्लाम के उदय के पूर्व बौद्ध, मध्य एशिया में व्यापाक रूप से प्रचलित था और एक संत पुरुष के रूप में बुद्ध की गाथा इस्लामी गाथाओं में भी शामिल हो गई थी।
- ☞ आत्मा तथा भौतिक तत्व के पारस्परिक संबंधों के विषय में सूफियों तथा हिंदू योगियों और रहस्यवादियों के विचारों में बहुत- सी समानताएं थीं।
- ☞ **सूफी सिलसिलों को मोटे तौर पर दो भागों में बांटा जा सकता है- बा-शरा अर्थात जो इस्लामी कानून (शरा) का पालन करते थे** और **बे- शरा अर्थात जो शरा से बंधे हुए नहीं थे।** दोनों प्रकार के सिलसिले भारत में प्रचलित थे।
- ☞ भारत में **चिश्ती सिलसिले** की स्थापना **ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती** ने की थी, जो पृथ्वीराज चौहान की पराजय और मृत्यु के कुछ ही दिनों बाद **1192 ई.** में भारत आया था। कुछ समय तक लाहौर और **दिल्ली** में रहने के बाद अंत में वह **अजमेर** चला गया।
- ☞ शेख मुईनुद्दीन (मृत्यु : 1235 ई.) के मुरीदों में बख्तियार काकी और काकी का मुरीद फरीद्दीन गंज-ए-शकर शामिल थे।
- ☞ फरीद्दीन की गतिविधियों के केंद्र हांसी और अजोधन (क्रमशः आधुनिक हरियाणा और पंजाब) थे। दिल्ली में उसका बहुत आदर था और वह जब भी दिल्ली आता था, उसके पास लोगों का तांता बंध जाता था। उसका दृष्टिकोण इतना उदार और जीव- दया की भावना से ओतप्रोत था कि उसके छंदों को **सिक्खों के आदिग्रंथ** में भी शामिल कर लिया गया।
- ☞ चिश्ती संतों में सबसे प्रसिद्ध **निजामुद्दीन औलिया** और **नासिरुद्दीन चिराग-ए-देहली** थे।
- ☞ ये आरंभिक सूफी संत निम्न वर्गों के लोगों के साथ निःसंकोच मिलते- जुलते थे। ऐसे लोगों में हिंदू भी शामिल थे। ये सादगी का जीवन व्यतीत करते थे और लोगों से उन्हीं की बोली **हिंदवी या हिंदी** में बात करते थे।
- ☞ इन संतों ने **गायन** के जरिए जिसे **''समा''** कहा जाता था, लोकप्रियता अर्जित की। यह गायन ऐसी चित्र- वृत्ति की सृष्टि करने में सहायक होता था, जिसमें **ईश्वर से सान्निध्य की अनुभूति** होती थी।
- ☞ निजामुद्दीन औलिया **यौगिक प्राणायाम** भी करता था और इससे यह इतना पारंगत था कि योगी लोग इसे **''सिद्ध पुरुष''** कहा करते थे।
- ☞ सुहरावर्दियों ने भारत में लगभग उसी समय प्रवेश किया था जब चिश्तियों ने किया था, परंतु उनकी गतिविधियां मुख्य रूप से पंजाब और मुल्तान तक सीमित थी। इस सिलसिले के सबसे प्रसिद्ध संत **शेख शिहाबुद्दीन सुहदावर्दी** और **हमीद्दीन नागौरी** थे।
- ☞ **चिश्तियों के विपरीत सुहरावर्दी संत गरीबी का जीवन बिताने में विश्वास नहीं करते थे।** उन्होंने राज्य की सेवा स्वीकार की और उनमें से कुछ लोग मजहबी विभाग में ऊंचे पदों पर थे।

- ☞ **चिश्ती संत** राज्य की राजनीति से अलग रहना ही पसंद करते थे और शाहों तथा अमीरों की संगति से दूर रहते थे।
- ☞ **नामदेव दर्जी था, जो संत बनने से पहले लुटेरे का जीवन बिताता था।** मराठी में लिखी उसकी कविताएं ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति से ओत- प्रोत हैं।
- ☞ **रामानुज के अनुगामी रामानंद** का जन्म **प्रयाग** में हुआ था और उसने प्रयाग के अलावा **काशीवास** भी किया था। उसने **विष्णु के स्थान पर राम की उपासना** का प्रवर्तन किया। इससे भी बड़ी बात यह थी कि उसने भक्ति का उपदेश **चारों वर्णों** के लोगों को दिया और विभिन्न जातियों के लोगों के एक रसोईघर के अपना खाना पकाने और साथ बैठकर खाने पर लगे निषेध को मानने से इंकार कर दिया। उसने **सभी जातियों के लोगों** को, जिनमें निम्न जातियों के लोग भी शामिल थे, **अपना शिष्य** बताया। उसके शिष्यों में **रविदास, कबीर, सेना** और **सघन** सी शामिल थे। इनमें से पहला **चमार,** दूसरा **जुलाहा,** तीसरा **नाई** और चौथा **कसाई** था।
- ☞ जो लोग तत्कालीन समाज - व्यवस्था के सबसे प्रबल आलोचक थे और जिन्होंने हिंदू-मुस्लिम एकता की जोरदार हिमायत की उनमें **कबीर** और **नानक** के नाम अग्रणीय हैं।
- ☞ **कबीर का जीवनकाल** आमतौर पर **पंद्रहवीं सदी** माना जाता है। उसने **ईश्वर के एकत्व** पर जोर दिया और उसे अनेक लोगों से संबोधित किया- जैसे राम, गोविंद, अल्ला, साई, साहिब आदि। उसने **मूर्ति- पूजा, तीर्थ-व्रत, गंगादि स्नान,** नमाज और अजान, सब पर तीव्र प्रहार किया। संत जीवन जीने के लिए वह गृहस्थ जीवन के त्याग को जरूरी नहीं मानता था।
- ☞ सिख धर्म की शिक्षाओं के स्रोत गुरु नानक का जन्म **1489 ई.** में **रावी तट पर** तलवंडी (अब **नानकाना**) नामक गांव में एक खत्री परिवार में हुआ था।
- ☞ चांद मीनार जो पंद्रहवीं सदी में बनाई गई थी, 210 फीट ऊंची है। इसकी चार मंजिलें हैं, जो ऊपर की ओर क्रमशः पतली होती चली जाती हैं। अब यह आड़ू रंग से पुती हुई है।
- ☞ शासकों और शाही परिवार के लोगों की कब्रों पर विशाल मकबरे बनाना मध्य कालीन भारत का एक लोकप्रिय रिवाज था। ऐसे मकबरों के कुछ सुप्रसिद्ध उदाहरण हैं- दिल्ली स्थित गयासुद्दीन तुगलक, हुमायूं, अब्दुर्रहीम खानखाना और आगरा स्थित अकबर व एत्मादुद्दौला के मकबरे।
- ☞ सराएं आमतौर पर किसी वर्गाकार या आयताकार भूमि खंड पर बनाई जाती थीं और उनका प्रयोजन भारतीय और विदेशी यात्रियों, तीर्थयात्रियों, सौदागरों, व्यापारियों आदि को कुछ समय के लिए ठहरने की व्यवस्था करना था।
- ☞ मांडु नगर मध्य प्रदेश में इंदौर से 60 मील की दूरी पर स्थित है। यह समुद्र तल से 2000 फीट की ऊंचाई पर बसा हुआ है। यहां से उत्तर में मालवा का पठार और दक्षिण में नर्मदा नदी की घाटी नीचे साफ दिखाई देती है।
- ☞ होशंगशाह द्वारा 1401-1561 ई. में स्थापित गौरी राजवंश की राजधानी के रूप में इस शहर ने काफी मशहूरी पाई। उसके बाद मांडु का इतिहास सुल्तान बाज बहादुर और रानी रूपमती के प्रेम प्रसंगों से जुड़ा रहा।
- ☞ हिंडोला महल एक बड़े रेल पुल की तरह दिखाई देता है जिसकी दीवारें बड़े-बड़े असमानुपातिक पुस्तों पर टिकी हुई हैं। यह सुल्तान का दीवाने आम था, जहां आकर सुल्तान अपनी प्रजा को दर्शन दिया करता था। जहाज महल एक शानदार दो-मंजिली इमारत है, जिसकी शक्ल पानी के जहाज जैसी है। यह दो जलाशयों के बीच में स्थित है और इसकी छत, बरामदे, बारजे और मंडप मानों पानी पर लटके हुए हैं। इसे सुल्तान गयासुद्दीन खिलजी ने बनवाया था।
- ☞ रानी रूपमती का दोहरा महल दक्षिणी प्राचीर पर बना हुआ है, जहां से नर्मदा घाटी का अति सुंदर दृश्य दिखाई देता है।
- ☞ होशंगशाह का मकबरा एक शानदार इमारत है। इसमें सुंदर गुम्बद, संगमरमर की जाली का काम, ड्योढ़ियां, प्रांगण, मीनारें और बुर्जें देखने लायक हैं। इसे अफगान शैली के पौरुष/मर्दानगी का उदाहरण माना जाता है।
- ☞ ताजमहल में मध्यकालीन भारत की विकासात्मक वास्तु प्रक्रिया अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गई।
- ☞ ताज की गरिमा दिन और रात के अलग-अलग समयों पर अलग-अलग रंगों का आभास कराती है। ताजमहल को शाहजहां ने अपनी बेगम मुमताज महल की याद में एक मकबरे के तौर पर बनवाया था।
- ☞ मकबरा चारबाग शैली में बना है, जिसमें फव्वारे और पानी के बीच से रास्ता है।
- ☞ चबूतरे के किनारों पर चारमीनारें खड़ी हैं, जो ऊपर की ओर पतली होती जाती हैं। इन चारमीनारों की ऊंचाई 132 फीट है। इमारत के मुख्य भाग की चोटी पर गोलाकार गुम्बद है और चार गुमटियां हैं, जो सुंदर नम रेखा बनाती हैं।
- ☞ इमारत के लिए संगमरमर राजस्थान में स्थित मकराना की खानों से खोदकर लाया गया था और मकबरे का यह सफेद संगमरमरी भवन आस-पास लाल बलुआ पत्थर से बनी हुई इमारतों से बिलकुल विपरीत दृश्य प्रस्तुत करता है।

☞ इमारत की ऊंचाई फर्श से छत तक 186 फीट और छत से शिखर के कंगूरों तक भी 186 फीट है।

☞ मकबरे के भीतरी भाग में नीचे तलघर और उस पर मेहराबदार अष्टभुजी विशाल कक्ष हैं और प्रत्येक कोण पर कमरा बना है और ये सब गलियारों से जुड़े हैं।

☞ **गोल गुम्बद कर्नाटक के बीजापुर** जिले में स्थित है। यह गुम्बद बीजापुर के आदिलशाही राजवंश (1489-1686 ई.) के सातवें सुल्तान **मुहम्मद आदिलशाह (1626-56 ई.) का मकबरा** है। इसे स्वयं सुल्तान ने अपने जीवनकाल में बनवाना शुरू किया था। इसका काम पूरा न होने के बावजूद यह एक शानदार इमारत है।

☞ गुम्बद एक विशाल वर्गाकार भवन है, जिस पर एक गोलाकार ढोल है और ढोल पर एक शानदार गुम्बद टिका हुआ है। जिसके कारण उसे यह नाम दिया गया है। यह गहरे स्लेटी रंग के बेसाल्ट पत्थर से बना है और इसे पलस्टर से संवारा गया है। गुम्बद की इमारत की हर दीवार **135 फीट लंबी**, **110 फीट ऊंची** और **10 फीट मोटी** है। ढोल और गुम्बद दोनों को मिलाकर इस इमारत की **ऊंचाई 200 फीट** से भी ऊंची चली जाती है। यह मकबरा **18.337 वर्ग फीट** में फैला हुआ है और विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मकबरा है।

☞ मकबरे के बड़े कक्ष में सुल्तान, उसकी बेगमों व रिश्तेदारों की कब्रगाह हैं और उनकी असली कब्रें नीचे तहखाने में हैं।

☞ इस इमारत में एक आश्चर्यजनक ध्वनि-प्रणाली है। गुम्बद के ढोल के साथ-साथ एक फुसफुसाहट दीर्घा (व्हिस्परिंग गैलरी) बनी हुई है, जहां धीरे से धीरे बोली गई या फुसफुसाई गई आवाज कई गुना तेज हो जाती है और उसकी प्रतिध्वनि कई बार गूंजती है।

☞ इमारत के चारों कोनों पर सात मंजिली अष्ट भुजाकर मीनारें बनी हैं। ये मीनारें ऊपर गुम्बद तक पहुंचने के लिए सीढ़ियों का काम भी देती हैं।

☞ मध्य कालीन भारत में स्थान-स्थान पर अनेक बड़ी-बड़ी मस्जिदें बनाई गईं, जहां नमाज आदि के लिए विशाल आंगन थे। यहां हर जुम्मे (शुक्रवार) को दोपहर बाद नमाज पढ़ने के लिए नमाजियों की भीड़ जमा होती थी।

☞ मध्य काल में, एक शहर में एक जामा मस्जिद होती थी, जो अपने नजदीकी परिवेश के साथ-साथ आम लोगों यानी मुस्लिम और गैर-मुस्लिम दोनों संप्रदायों के लोगों के लिए जीवन का केंद्र बिंदु थी।

☞ उसमें एक खुला सहन होता था, जो तीन तरफ से ढके हुए रास्तों (इबादत घरों) से घिरा हुआ होता था और उसमें पश्चिम की ओर किबला लिवान होता था। यहीं पर इमाम के लिए मेहराब और मिमबर बने होते थे। नमाजी अपनी इबादत (प्रार्थना) पेश करते समय मेहराब की ओर ही अपना मुंह रखते थे क्योंकि यह मक्का में काबा की दिशा में होती थी।

शब्दावली

☞ **अण्ड -** अर्द्धगोलाकार गुम्बद यह आमतौर पर बौद्ध-स्तूप संरचना में प्रयोग किया जाता है।

☞ **अरबस्क -** लाइनों, पत्तियों और फूलों वाली सजावटी डिजाइन जो इण्डो-इस्लामिक वास्तुकला की विशेषता है।

☞ **आमलक -** धारीदार आंवले के फल जैसे आकार वाला शिखर, जो प्रायः उत्तर भारतीय मंदिरों के शिखर के शीर्ष पर बनाया जाता है।

☞ **कार्निस -** नीचे सजावट के लिए दीवार पर उभारी गई पट्टी।

☞ **किला-ए-कुहान मस्जिद -** दिल्ली के पुराना किला स्थित शेरशाह सूरी अथवा हुमायूं द्वारा निर्मित मस्जिद।

☞ **गोपुरम् -** मंदिर का मुख्य प्रवेश द्वार।

☞ **चक्र -** बौद्ध संप्रदाय के पूजा का चक्र/पहिया।

☞ **जातक -** गौतम बुद्ध के जन्म के बारे में मानव और जानवर दोनों के रूपों में उल्लिखित एक साहित्य।

☞ **टेम्पेरा -** यह एक स्थायी तथा रंगीन पदार्थ है, जो पानी में घुलनशील होता है।

☞ **तीर्थंकर -** जैन धर्म के आध्यात्मिक उपदेशक/गुरु।

☞ **धर्मचक्रपवर्तन -** भगवान बुद्ध द्वारा वाराणसी के निकट सारनाथ में दिया गया पहला प्रवचन जिससे धर्मरूपी चक्र का आरंभ हुआ।

☞ **पिएत्रा-ड्यूरा -** अर्द्ध कीमती पत्थरों के प्रयोग से बना मोसैक (पच्चीकारी का काम), जो ताजमहल में दीवारों, छतरियों और संगमरमर पर देखने को मिलता है।

☞ **फ्रेस्को -** भित्ति चित्रकारी के प्रयोग में लाया जाने वाला गीले चूने का प्लास्टर।

☞ **बोधिसत्व -** बौद्ध धर्म में बोधिसत्व से तात्पर्य महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्मों से है।

☞ **स्तूप -** बौद्ध संप्रदाय के लोगों द्वारा पूज्य वह अण्डाकार संरचना जिसमें बुद्ध के अवशेष रखे हों।

☞ **हर्मिका -** अर्द्ध वृत्तीय स्तूप के गुम्बद पर छोटे वर्गाकार बाड़ लगाना।